चकमक

मई 2004 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

आकाश मालवीय, पाँचवीं, देवास, म.प्र.

तोफीक शाह, नवमीं, हरणगाँव, हरदा, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-11 मई 2004

क्या-क्या है इस अंक में

कहानी

किसका घर ज़्यादा अच्छा है 15

रानी की मुसीबत 24

विशेष लेख

दो बातें आम से 10

सूरज की बिन्दी 20

केनजागा 28

कविताएँ

हवा हुई शैतान 3

आम 36

तुम भी बनाओ

उड़ती हुई चिड़िया 18

अपनी प्रयोगशाला

पिनहोल कैमरा 23

हर बार की तरह

इस अंक में 1

इस बार की बात 2

मेरा पन्ना 4

चित्र पहेली 30

पुस्तक चर्चा 32

माथापच्ची 34

खेल समाचार 37

चकमक समाचार 38

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

हम लोग जब भी तुम्हारे लिए कुछ लिखते हैं तो अन्त में यह ज़रूर लिखते हैं कि.........

- इस बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? चिट्ठी लिखकर बताना।
- कैसा लगा यह प्रयोग? क्या क्या देखा तुमने? चिट्ठी लिखकर बताना।
- छुट्टियों में क्या क्या किया? चिट्ठी लिखकर बताना।
- क्या तुम्हें लगता है कि ज़िन्दगी ऐसी होनी चाहिए कि कुछ लोग गरीब हों और कुछ अमीर? चिट्ठी लिखकर बताना।

तुम पढ़-पढ़कर बोर तो नहीं हो जाते? आखिर तुम्हारी चिट्ठियाँ हमारे लिए इतनी अहमियत क्यों रखती हैं? सोचा इस बार इसी के बारे में तुमसे बात करें। चकमक की शुरू से ही यह कोशिश रही है कि हम उन बातों पर तुम सब पाठकों से चर्चा कर पाएँ जो तुम्हारे अपने हैं। क्या भाता है तुम्हारे मन को, और क्या बुरा लगता है? किस चीज़ में मज़ा आता है? क्या जानना चाहते हो तुम?

इस तरह की बातों का अन्दाज़ा लगाने के लिए हमारे पास दो तरीके हैं। एक है ढेर सारे बच्चों के बीच में काम करना, उनसे गपशप करना, खेलना-कूदना, मस्ती करना और उनके दोस्त बन जाना। तब वो अपनी बातों में हमें भी शामिल करेंगे। और दूसरा तरीका यह है कि हम चकमक पढ़ने वालों से पूछें, कि वो चिट्ठी लिखकर हमें बताएँ कि क्या पढ़ना चाहते हैं वो।

पहले तरीके की कोशिश तो हम करते हैं। पर फिर भी अक्सर हमारे पास दूसरा तरीका ही बचता है। इसलिए हम बार-बार आग्रह करते हैं तुमसे।

तो लिखोगे न हमें चिट्ठी?!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-11 मई 2004

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
कविता सुरेश
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर
शशि सबलोक

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/ एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन : 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

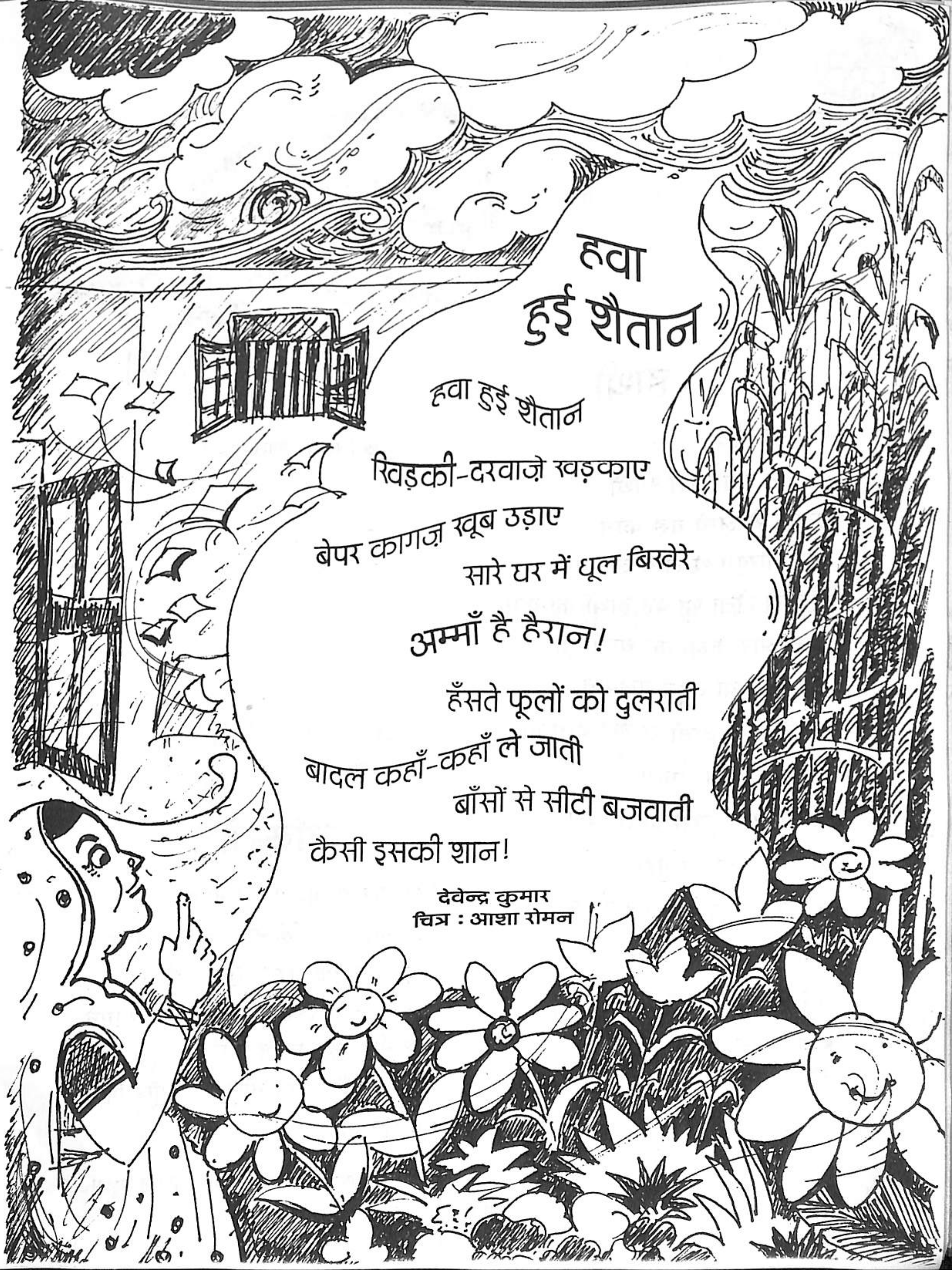

हवा हुई शैतान

हवा हुई शैतान
खिड़की-दरवाज़े खड़काए
बेपर कागज़ खूब उड़ाए
सारे घर में धूल बिखेरे
अम्माँ है हैरान!

हँसते फूलों को दुलराती
बादल कहाँ-कहाँ ले जाती
बाँसों से सीटी बजवाती
कैसी इसकी शान!

देवेन्द्र कुमार
चित्र : आशा रोमन

● जितेन्द्र, कँवलासा, खातेगाँव, देवास, म. प्र.

हाथी

एक था हाथी
वह बन गया मेरा साथी
उसके थे लम्बे बड़े कान
और नाखून थे लम्बे लमबार
सूँड से लेता था वह हाथों का काम
गन्ने और केलों का चारा खाकर
बन गया था बहुत बलवान
अपने लम्बे दाँतों से कर देता वह
शेर का काम तमाम
करता था मुझसे बहुत प्यार
और घुमाता था मुझे
करके अपनी पीठ पर सवार
एक था हाथी
वह बन गया मेरा साथी।

● सोहन वर्मा, पाँचवीं, अजनास, देवास, म. प्र.

नींबू तोड़े

एक बार मैं अपनी सहेली के यहाँ गई। वहाँ हमने खूब खेला। फिर हमने फल तोड़े। हम एक घर में घुस गए। उस घर में कोई नहीं रहता। उस घर के सामने एक नींबू का पेड़ है। उसमें बहुत सारे नींबू लगे हैं। हमने नींबू तोड़े और फिर हम घर आ गए।

● प्रियंका वाडेकर, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

मैं दिल्ली गया

मैं जब दिल्ली गया तब मैं बहुत सी चीज़ें घूमा। लाल किला, कुतुब मीनार, इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन आदि। उधर मैं एम्स में भरती हुआ। एम्स के डॉक्टर बहुत अच्छे हैं। उधर की नर्सें समय पर दवा देती थीं। डॉक्टर लोग मरीजों को अच्छी तरह देखते थे। उधर मैं टाइम से दवा खाता था। मुझे डॉक्टर और नर्सें अच्छी लगती थीं। अब मैं उधर से निकल गया हूँ। उधर मैं बहुत दिन रहा। अब मैं अपने घर आ गया हूँ।

● क्षितिज कुमार, पाँचवीं, भोजपुर, बिहार

भैया मेरे हैं शैतान

भैया मेरे हैं नटखट
दिनभर करते हैं खटपट
मम्मी मुझसे प्यार करती
उसे नहीं है बिलकुल डर
मम्मी जब बाज़ार हैं जातीं
स्कूटर दिनभर ही चलाते
हे बहना तुम मम्मी से
कुछ न कहना।
अगर तुम मुझे मारोगे तो
ज़रूर कहूँगी आपकी बात।

● राखी पाल, छठवीं, देवास, म. प्र.

● अभय जैन, पहली, डोंगरगाँव, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

जानवरों की छावनी

हम चौथी के बच्चे छावनी क्या होती है यह जानने के लिए फलटण से 20 किलोमीटर दूर छावनी में मुलाकात लेने गए थे। वहाँ पर हमने एक बूढ़े काका से पूछा कि छावनी मतलब क्या?

तो उन्होंने हमें बताया कि जहाँ सूखा पड़ा होता है वहाँ जानवरों (जिसमें गाय, भैंस, बैल, बछड़ों और बकरी) को चारा नहीं होता है। इसलिए सरकार द्वारा की गई मदद को छावनी कहते हैं। छावनी में प्रत्येक बछड़े को सात किलो चारा और बड़े जानवरों को 15 किलो चारा मिलता है। छावनी में हर घर के 4–8 जानवर हैं। जानवरों के लिए शेड बनाए जाते हैं। छावनी में 5900 लीटर पानी का टेंकर रोज़ आता है।

पता है यदि छावनी नहीं होती तो जानवर मर गए होते और मुझे और मेरे जैसे अनेक बच्चों को दूध नहीं मिल पाता। बड़ों को चाय नहीं मिल पाती। यहाँ के जानवर बहुत कमज़ोर दिख रहे थे। बच्चों की तरह लोगों ने अपने जानवर पाले थे लेकिन उनकी हालत देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।

हम बच्चों ने वसीम दादा, कलपीता बाई, सुवर्णा बाई के साथ चर्चा की। फिर हमने ग्रुप बनाए और जिनके जानवर छावनी में थे, उनसे मुलाकात की। फिर हम शाम को घर आ गए।

● विराज तानाजी तावरे, चौथी, फलटण, महाराष्ट्र

● मनीषा, तीसरी, कंवलासा, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

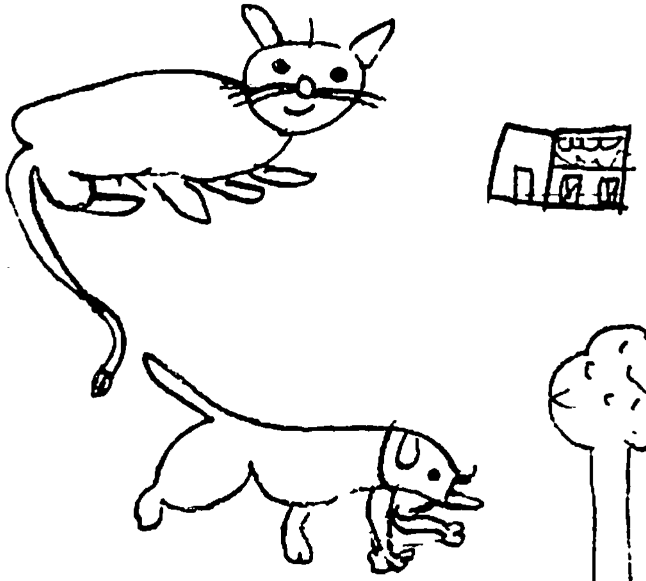
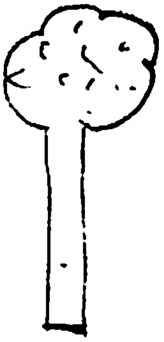

● सईदा बानो, छठवीं, होशंगाबाद, म. प्र.

सर जी ने मारा

मैं जब एक दिन खाना खाने की छुट्टी में आया तो मुझे गुप्ता सर जी ने मारा। उन्होंने इसलिए मुझे मारा कि मैं दीवार पर लिख (गूद) रहा था। एक लड़का और भी गूद रहा था तो उसे भी गुप्ता सर जी ने मारा। एक लड़के ने मेरी शिकायत कही तो मैं सुनते ही वहाँ से भागा। तो सर जी ने कहा कि पकड़ो तो सबने मुझे पकड़ लिया। फिर सरजी ने मुझे मारा।

● गोपी आठिया, चौथी, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

हिरण गया घूमने

एक हिरण था उसने सोचा मैं अभी कुछ दिन से कहीं घूमा नही हूँ। मुझे आज कहीं जाना चाहिए। फिर वह जाता है और चलता रहता है। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे ऐसा लगता है कि मैं किसी सुनसान जगह पर पहुँच गया हूँ। उसे बहुत डर लग रहा था। उस जंगल में बहुत बड़े-बड़े जानवर रहते थे। वह और आगे बढ़ता गया। उसका डर कम नहीं हो रहा था। फिर थोड़ी दूर गया तो उसे एक जानवर दिखा। वह जानवर शेर था। जब शेर ने उसे देखा तो उसने हिरण से कहा कि तुम कौन हो? मेरे इलाके में तुम नए दिखते हो? और हमारे यहाँ जो भी जानवर नया दिखता है उसे मैं खा जाता हूँ। जैस ही शेर उसे खाने के लिए आगे आया हिरण ने कहा महाराज मुझे घूमने का मन कर रहा था। तो मैं घूमने के लिए निकला था। तो मुझे एक गली दिखाई दी तो मैं उस गली में आ गया। मुझे माफ कर दो, मैं फिर कभी यहाँ वापस नहीं आऊँगा। शेर ने उससे कहा, फिर कभी मत आना। फिर हिरण उस जंगल में कभी नहीं आया।

● राहुल मिश्रा, छठवीं, देवास, म. प्र.

दहेज

हमारा देश दहेज में अंधा हो गया है। अभी एक माह पहले की बात है कि मेरी सहेली की शादी हुए एक साल हुआ था। उसका पति शराब पीता था। एक दिन वह शराब के नशे में था और अपनी पत्नी से बोला, 'अपने बाप से पचास हज़ार रुपए ले आना वरना मैं तुझे जान से मार दूँगा।' वह उस दिन कुछ नहीं बोली। सबेरे उसका पति सास ससुर ननद सबने मिलकर वही धमकी दी। तो वह गुस्से में आकर बोली, 'मैं नहीं लाऊँगी। न ही मैं अपने मायके जाऊँगी।' तो सब लोगों ने बूरी तरह मारा-पीटा। और बोले, 'निकल जा घर में से।' तो वह बोली 'जीते जी इस घर से नहीं जाऊँगी।' तो उसके पति ने गुस्से में आकर आग लगा दी। और फिर उसके मायके खबर भेज दी। लड़की के माँ-बाप फौरन वहाँ पहुँच गए। वहाँ पुलिस मौजूद थी। लड़की ने सही बयान दे दिए लेकिन वह अंतिम साँसें गिन रही थी। अपने माँ-बाप को देखकर रोने लगी। फिर वह मर गई। दहेज ने कितनी लड़कियों की जान ले ली। दहेज प्रथा बंद होना चाहिए।

● लक्ष्मी जैन, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

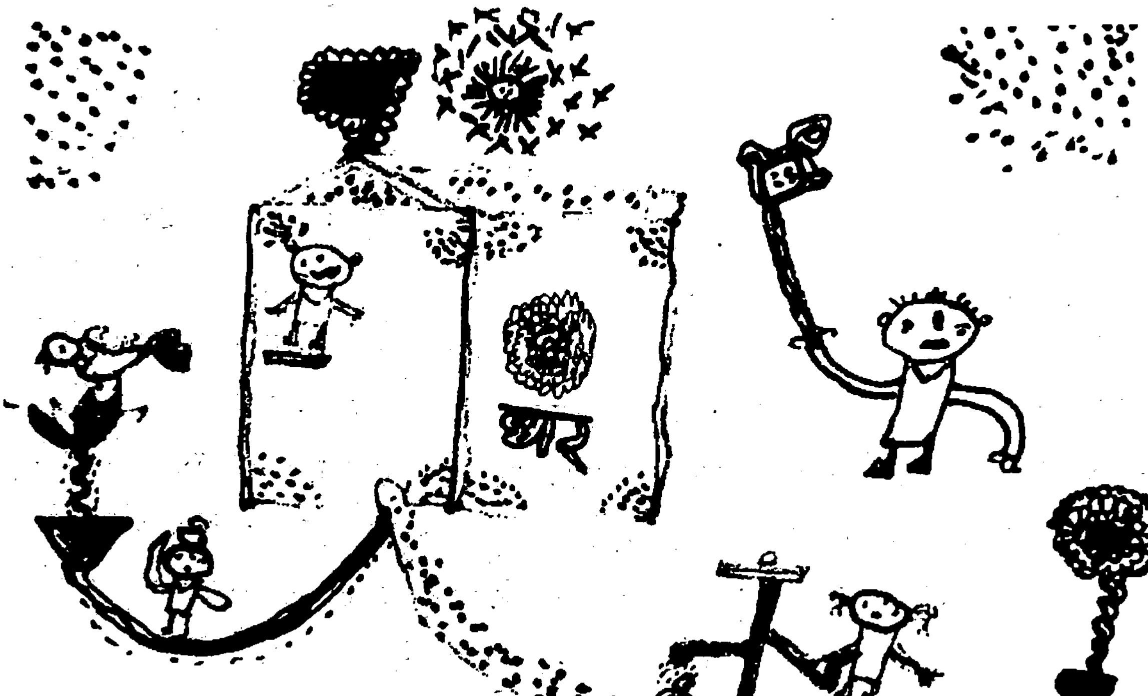

● रुकमणी यादव, चौथी, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

गढ़ाकोटा की यात्रा

हमारे विद्यालय में इस वर्ष भी सांस्कृतिक तथा बौद्धिक प्रतियोगिता हुई थी। यह गढ़ाकोटा में हुई थी जो शाहगढ़ से लगभग पाँच घण्टे की दूरी पर है। हम लोग मिनी बस से गढ़ाकोटा गए थे. वहाँ पहुँचकर खाना खाकर सो गए। सुबह उठकर प्रार्थना हुई। फिर प्रतियोगिता शुरू हुई। मेरा नम्बर आने पर मैंने पर्ची खोलकर विषय देखा, फिर भाषण दिया। सभी प्रतियोगिता के बाद हम लोगों ने खाना खाया। फिर पुरस्कार दिए गए। फिर हम उसी बस से वापस घर आ गए। रास्ते में कोई कठिनाई भी नहीं आई। यात्रा में बहुत मज़ा आया।

● साकेत गुप्ता, पाँचवीं, शाहगढ़, सागर, म.प्र.

पृथ्वी

पृथ्वी है गोल-मटोल
सूरज उसका साथी अनमोल
खेला करते यूँ दिनभर
जैसे हो दूध-मलाई
उनको यूँ खेलते देखकर
तारों के मन में भी आया
क्यों न उनसे दोस्ती हम भी रचाएँ
सब मिलकर कुछ मज़ा उड़ाएँ
चाँद भी आ गया बीच में
तारों की भीड़ भी आई
सबने मिलकर दोस्ती रचाई
बोले गले मिल जाओ भाई।

● अनीता, छठवीं, देवास, म.प्र.

● अक्षितारा, साढ़े तीन वर्ष, दिल्ली

दो बातें आम से

शशि सबलोक

पाकिस्तान में गुज़रे माँ के बचपन का एक किस्सा भुलाए नहीं भूलता। गर्मियों की दोपहर एक चादर में आम बाँधकर वह उसे पास बहती नदी में सरका देतीं। और फिर अपनी सहेलियों के साथ कूद पड़तीं पानी में। पानी के छपाकों के साथ आम चूसते-चूसते। उस मज़े का हम अंदाज़ ही लगा सकते हैं। लेकिन यकीन मानो इन जैसे आम के दीवानों की कमी नहीं। इसके किस्से हर जगह मिल जाएँगे- शायरी में भी, आम ज़िन्दगी में भी।

इतिहास

यूँ तो आम जंगल में जाने कब से उगता रहा है। ऐसा लगता है कि तकरीबन 4000 साल पहले इसे दक्षिण पूर्व एशिया (खासतौर पर भारत और बर्मा) में घरेलू पेड़ की तरह उगाया जाने लगा। उस समय के बौद्ध और हिन्दु मंदिरों में इसके फल, फूल, पत्तियों के चित्र देखे जा सकते हैं। एक दंतकथा है कि बुद्ध को उसके एक शागिर्द ने आम का एक बगीचा भेंट किया था ताकि वे ठण्डक में बैठ सकें। चलो इस नक्शे में देखते हैं कि यहाँ से आम पूरी दुनिया में कब, कैसे पहुँचा। नक्शे में कुछ जगहों पर नम्बर लिखे हैं और नीचे नम्बर से उन जगहों के नाम और आम के वहाँ पहुँचने का सम्भावित समय लिखा है।

1. भारत (चौथी सदी ईसा पूर्व, कहते हैं बौद्ध भिक्षुओं ने इसे एशिया के अन्य कुछ देशों में पहुँचाया)
2. म्यांमार (बर्मा)
3. अण्डमान
4. मलेशिया एवं कुछ पूर्वी एशिया के देश
5. पूर्वी अफ्रीका (दसवीं सदी)
6. पश्चिमी अफ्रीकी देश (सोलहवीं सदी)
7. ब्राज़ील (सोलहवीं सदी)
8. वेस्टइंडीज़ (बारबाडोस-1742)
9. मैक्सिको (19वीं सदी के शुरू में)
10. जमैका (1782)

आम की खास बातें...

चलो शुरू करते हैं अपने आँगन में इक अमवा रोपने से। इसके लिए सबसे पहले वह जगह तलाशते हैं जहाँ आम रोपना है। जगह ऐसी हो जहाँ सूरज की भरपूर रोशनी आती हो। थोड़ी ढलान हो जिससे पानी वहाँ रुके नहीं। वैसे तो मिट्टी कैसी भी चल जाएगी पर पानी को कम बाँधने वाली मिट्टी आम के लिए अच्छी होती है। मिट्टी का गहरा होना भी ज़रूरी है क्योंकि इसकी जड़ बहुत गहरे तक जाती है। कोई 20 फीट तक ग़हरी। मिट्टी में पोषक तत्व होने से आम की गुणवत्ता बढ़ेगी यानी वो खाने-देखने में बढ़िया होगा। इसलिए इसका ख्याल करना ज़रूरी है। इसमें तुम्हें घर के बड़ों की ज़रूरत लग सकती है। जगह चुनने के बाद उस जगह की मिट्टी को खोदकर पोली कर लेना। एक गड्ढा खोद रखो तो अच्छा।

जगह चुनते समय आम के पेड़ की विशालता को भी दिमाग में रखना। आम एक सदाबहार पेड़ है।

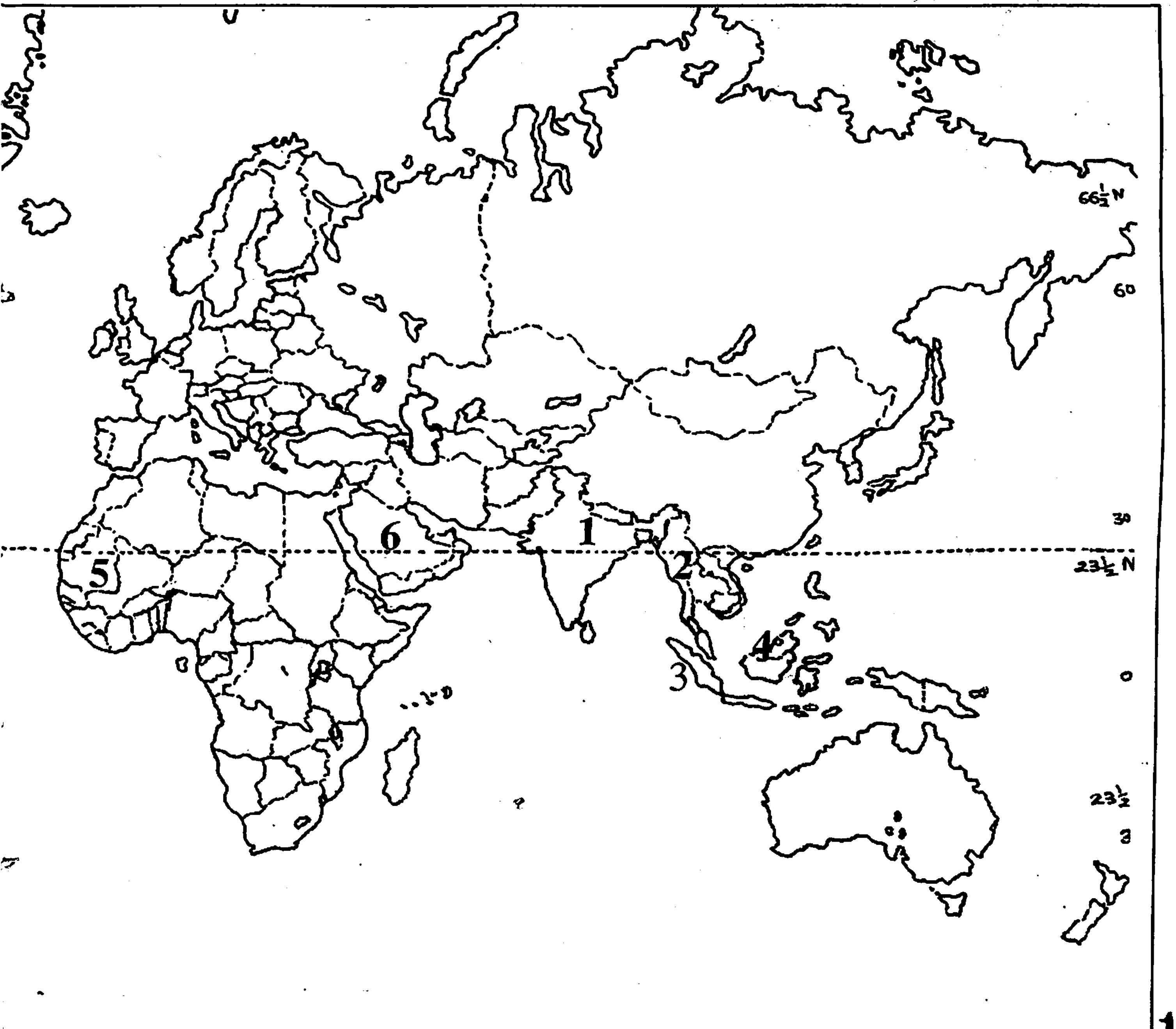

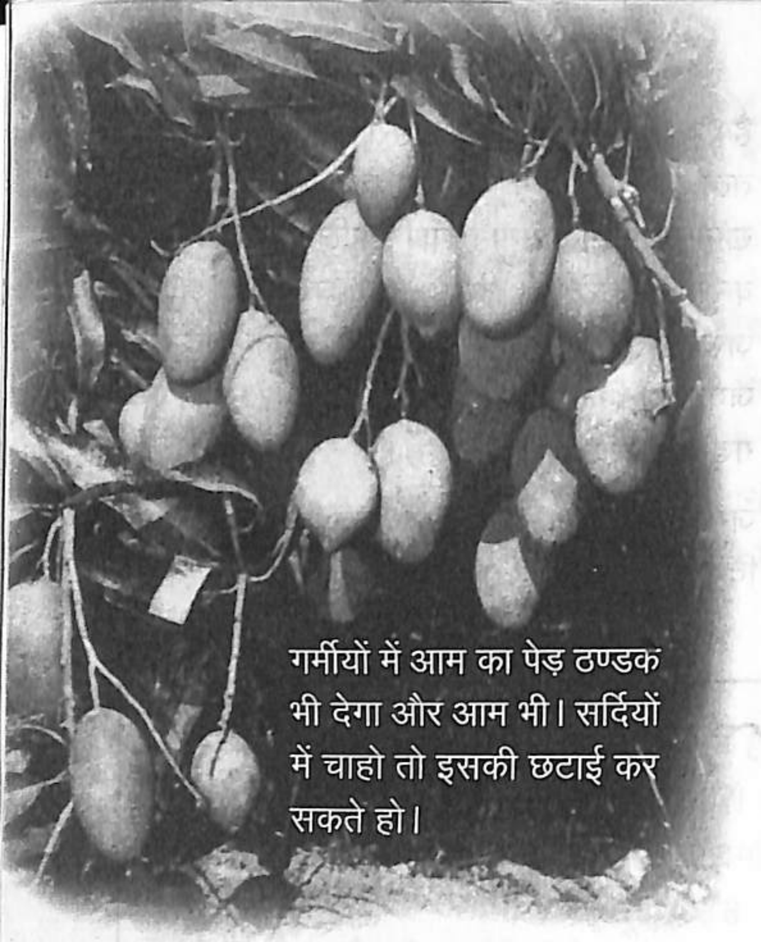

गर्मीयों में आम का पेड़ ठण्डक भी देगा और आम भी। सर्दियों में चाहो तो इसकी छटाई कर सकते हो।

आम की उम्र भी बहुत होती है। कोई आश्चर्य नही की तुम्हारे बोए आम को तुम्हारे पर पोती-पोते खाएँ। कुछेक 300 से भी ज़्यादा साल के पेड़ों को फलते देखा गया है।

अरे यह क्या बात पेड़ तक पहुँच गई जबकि बीज का तो अता पता ही नहीं। लेकिन अभी कुछ इंतज़ार। मॉनसून आने में अभी वक्त बाकी है। मॉनसून के शुरू का समय आम बोने के हिसाब से अच्छा है। उस वक्त तुम जब भी कोई बढ़िया आम खाओ तो उसकी गुठली यानी बीज को ले जाकर तुरन्त बो देना। बीज सूखना नहीं चाहिए। इसे लगातार पानी से सींचते रहो। 10-12 दिनों में आम का नन्हा सा पौधा सर उठाता नज़र आएगा। जैसे-जैसे पेड़ बढ़ेगा पानी देना कम करते जाओ।

फिर एक लम्बा इंतज़ार। शायद 6 साल या इससे भी ज़्यादा। इस दौरान कई दिक्कतें आ सकती हैं। तरह तरह के कीट पतंगों का डर। कभी पत्तियों में छेद होता दिखेगा तो कभी तने पर जमी फफूंद उदास कर जाएगी। लेकिन उपचार तो है न। तुम ठीक से ख्याल करोगे तो पेड़ फिर लहलहाएगा। इस पर चढ़ तुम दुनिया भर की मस्ती करोगे। पेड़ के बहाने कितनी चिड़ियाँ, कितनी गिलहरियाँ तुम से मिलने आएँगी।

फिर उन दिनों जब तुम परीक्षाओं की तैयारी में लगे होगे। तुम्हें हवाओं में एक अजीब सी गंध महसूस होगी। हो सकता है तुम्हें उससे एलर्जी भी हो जाए। इसका कारण है पेड़ की शाखों के पोरों पर लगे बौरों के गुच्छे के गुच्छे। इन बौरों से एक ऐसा उड़ने वाला पदार्थ निकलता है जिससे कुछ लोगों को साँस की तकलीफ हो सकती है। खैर बौर आ गए। अब आम का इंतज़ार बस खत्म ही हुआ। 3-4 महीने और। फिर लगेंगी केरियाँ, कच्चे आम, पके आम।

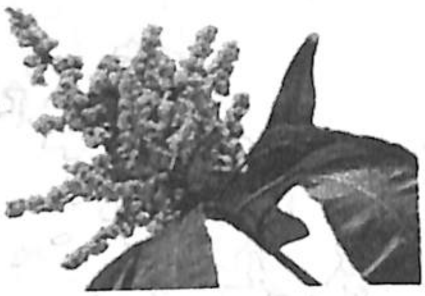

मेरे ख्याल से आम ही एकमात्र ऐसा फल होगा जो सब्ज़ी में भी डल सकता है, जिसकी चटनी, जैम, आइसक्रीम, केक, मुरब्बा, अचार, आम पापड़, लौंजी, जूस, अमचूर सभी कुछ बन सकता है। अगले पन्नों पर कुछ आसान सी चीज़े बनाना भी बताया है।

तुम्हारे आँगन कौन-सा आम लगा यह तो तुम्हें पता होगा। भारत में इसकी 500 (कोई तो 1000 तक कहते हैं) से ज़्यादा किस्मे हैं। इनमें से 350 तो नर्सरी में उगाई जाती है। 82 किस्में दक्षिण भारत में उगाई जाती हैं। कुछ का ज़िक्र यहाँ किया जा रहा है। देखो इनमें से तुम कितनों को पहचान पाते हो।

काटकर खाने वाली किस्मों में तोतापरी, नीलम, दशहरी, लंगड़ा, केसर, बंगनापल्ली आदि

> वनस्पति शास्त्र की नज़र से देखें तो आम काजू की प्रजाति का पेड़ है। है न मज़ेदार बात!

आम और ग़ालिब के किस्से...

एक दफा ग़ालिब अपनी बेगम के साथ आम खाने में मसरूफ थे। ग़ालिब आम खाते जाते, गुठलियाँ और छिलके बीबी के सामने रखते जाते। उसी वक्त उनका एक दोस्त आया। ग़ालिब ने चुटकी ली, देखिए हमारी बेगम को। कितने आम चट कर गई हैं! दोस्त भी कम न था। बोला बेगम ने कम-अस-कम गुठलियाँ तो छोड़ दीं। आप तो....!

एक बार ग़ालिब अपने दोस्त हकीम रज़िउद्दीन के साथ बैठे थे। इतने में एक गधा वहाँ आया। उसने गली में पड़े आम के छिलके को सूँघा और चला गया। रज़िउद्दीन बोले, "देखिए जनाब आम तो गधे भी नहीं खाते हैं।" ग़लिब ने हाज़िरजवाबी की, "जनाब सिर्फ गधे ही आम नहीं खाते।"

मौलाना फज़ल ग़ालिब के करीबी दोस्त हुआ करते थे। ग़ालिब अपने दोस्तों के साथ बैठे थे। सभी आम की तारीफ किए जा रहे थे। ग़ालिब ने भी आम पर एक शेर कहा... आम मीठे हों और बहुत हों!

शामिल हैं। कुछ और किस्में हैं फज़ली, सफेदा, चौसा, मालदा, सफदर पसंद, हफूस, राजापुरी, रॉयल, ज़रदालु आदि।

आम स्वादिष्ट तो है ही गुणों का भी भण्डार है। यह विटामिन ए का समृद्ध स्रोत है। यानी यह आँखों के लिए अच्छा है। इसमें मौजूद विटामिन बी और सी से सर्दी से बचाव होता है। कार्बोहाइड्रेट ऊर्जा देता है। आम पचाने को भी आसान बनाता है। भोजन में रेशेदार पदार्थ होने से कब्ज़ आदि में राहत मिलती है। और आम में रेशा बहुतायत में होता है। इसके पत्तों, छाल, जड़ से कई बीमारियों की दवा बनती है।

इसके फायदों की सूची इससे कहीं लम्बी होगी। लेकिन हम यहाँ आम से दोस्ती करने आए थे। कुछ बाते जान लीं। ढेर सी रह गईं। अब तो तुम्हारे आँगन में आ पहुँचा है आम। तो देखते रहना उसके पत्तों का आना, रंग बदलना, बौर का झरना, चिड़ियों का घोंसले बनाना, केरी का आम बनना......।

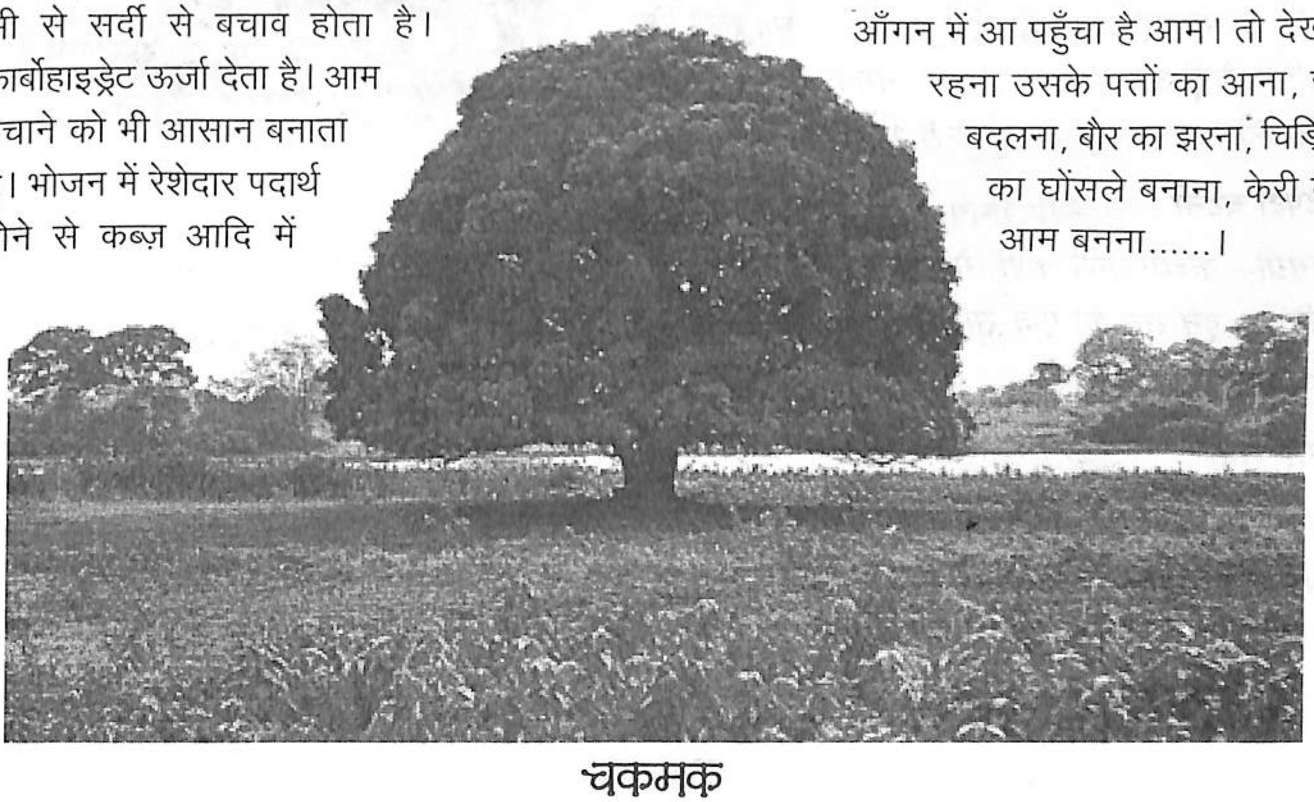

तुम भी बनाओ...

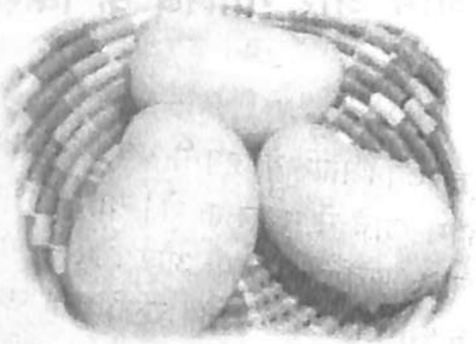

यहाँ हम आम से बनने वाले कुछ सरल व्यंजनों को बनाने का तरीका बता रहे हैं। हो सकता है इनमें से कुछ चीज़ें तुम्हारे लिए नई नहीं हों। घर पर बनती होंगी और तुम इनका मज़ा उड़ाते होगे। पर विधि पढ़कर खुद इन्हें बनाकर खाने का मज़ा ही कुछ और है। तुम कोशिश तो करके देखो।

पना

सामग्री - कच्ची केरी, शक्कर, जीरा, सौंफ, काली मिर्च, नमक, पानी।

तरीका - कच्ची केरी को अच्छी तरह उबाल लो। ठण्डा हो जाने पर उसका छिलका उतार लो और फिर हाथ से मसलकर उसका गूदा अलग कर लो। अब इस गूदे और शक्कर को पानी में डालकर एक बार फिर से अच्छी तरह से मसल लो। इसमें भुना जीरा, भुनी सौंफ और काली मिर्च पीसकर डाल दो। यह तो हुआ मीठा पना। खट-मिठ चाहो तो नमक भी डाल सकते हो।

केरी भात

सामग्री - चावल, केरी, नमक, राई, मीठा नीम और तेल।

तरीका - कच्ची केरी को अच्छी तरह से धोकर छिलके समेत किस लो। फिर चावल को अलग से पका लो। जब यह पका हुआ भात कुछ ठंडा हो जाए तो तेल गरम करके उसमें राई और मीठे नीम का छौंक लगा लो। फिर उसी में केरी और भात मिलाकर, नमक डालकर थोड़ा चला लो। बस, लज़्ज़तदार केरी भात खा लो!

चटपटी चटनी

सामग्री - कच्ची केरी, हरी मिर्च, अदरक, हरा धनिया, पुदीना, नमक, प्याज।

तरीका - इन सब को एक साथ पीस लो। बस, चटपटी चटनी तैयार है चट कर जाने के लिए!

मैंगो शेक

सामग्री - दूध, पके आम, शक्कर, इलायची

दूध को उबालकर ठण्डा कर लो। आम को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर शक्कर के साथ पीस लो। फिर इसमें ठण्डा दूध, पिसी इलायची मिलाकर अच्छी तरह से घोल लो। बढ़िया नाश्ता तैयार।

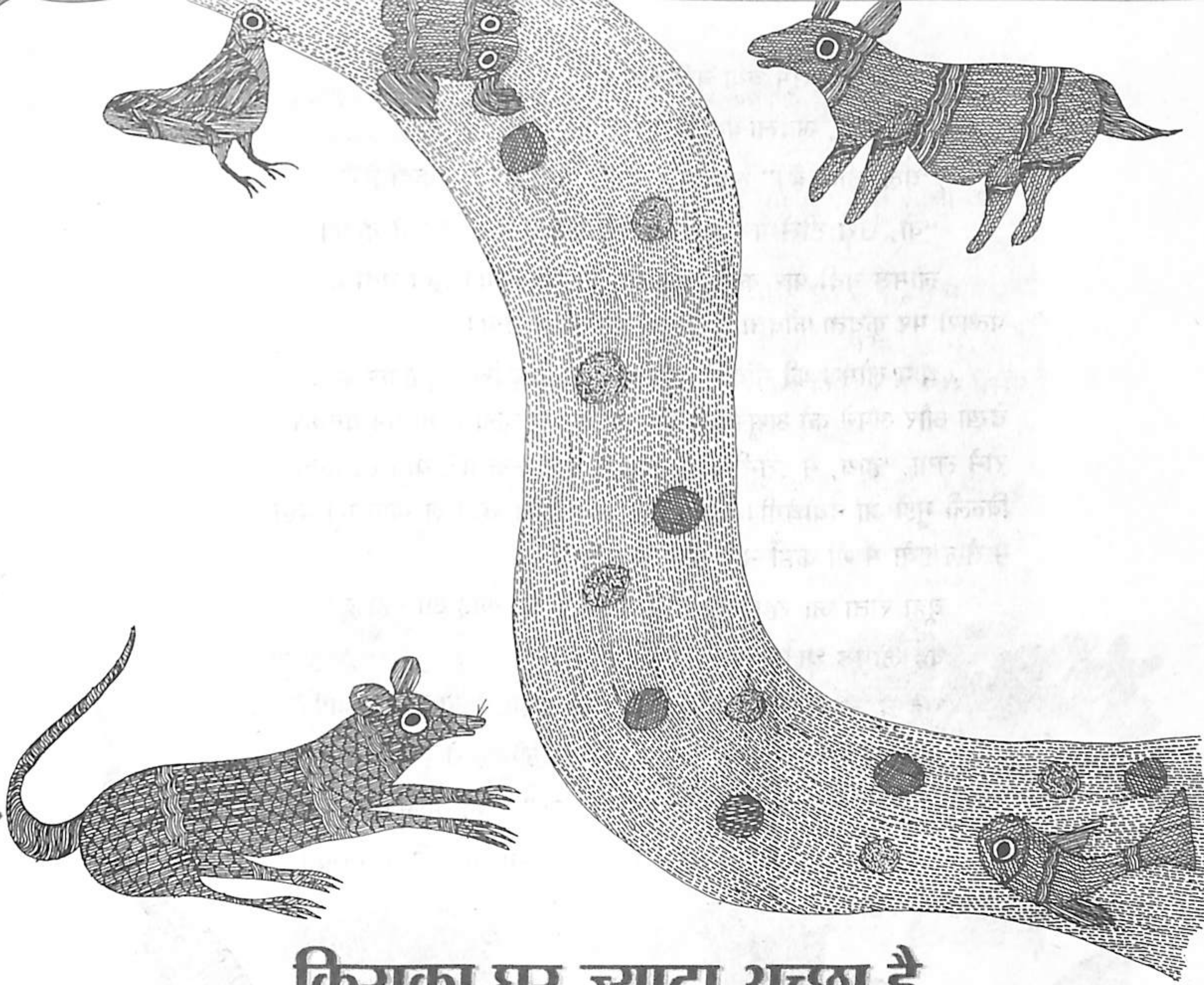

किसका घर ज़्यादा अच्छा है

नदी में पानी कम था। रेत और गोल-गोल पत्थर सुन्दर लग रहे थे। पास के टीले पर रहने वाला चूहा नदी तट पर पानी पीने आया। देखता क्या है ऐन सामने दूसरे तट पर लोमड़ खड़ा है।

"नमस्ते, लोमड़ चाचा! क्या हाल-चाल हैं?" चूहे ने कहा।

"नमस्ते, चूहे भाई! हाल-चाल तो बुरे नहीं, पर बहुत अच्छे भी नहीं हैं।" लोमड़ ने जवाब दिया, "मेरी माँद तंग है। उसमें गरमाहट रहती है, पर जब करवट बदलता हूँ, तो बगलें दीवारों से रगड़ खाती हैं।"

"मेरी मुसीबत उल्टी है।" चूहा बोला, "बारिश से जमीन कट गई है। मेरा घर ज़्यादा ही खुला हो गया है।"

"अरे, तो इसमें क्या बुरी बात है?"

"तो चलो, अदला-बदली कर लेते हैं।"

"चलो ठीक है।" लोमड़ ने कहा, "तुम्हारा घर कहाँ है?"

"वो, उस टीले पर, वट वृक्ष की कोटर में।" चूहे ने कहा।

लोमड़ नदी पार करके इस तट पर आ गया। चूहा नदी के पत्थरों पर कुदता-फाँदता हुआ उस पार चला गया।

चूहा लोमड़ की माँद में पहुँचा। चारों ओर सिर घुमाकर उसे देखा और अपने को असुरक्षित महसूस कर पिछली टाँगों पर बैठकर रोने लगा, 'हाय, मैं इतनी बड़ी गुफा में क्या करूँगा? यहाँ तो कोई बिल्ली मुझे आ दबोचेगी। कौआ देख लेगा और उठा ले जाएगा। यहाँ मैं तेज़ हवा में भी कहीं नहीं छिप सकता।'

चूहा रोता जा रहा था। तभी उसने सुना, कोई आ रहा है।

वह लोमड़ था।

चूहे ने जल्दी-जल्दी आँसू पोंछे और बोला, "लौट क्यों आए?"

"तुम्हारे बिल में घुस ही नहीं पाया।" लोमड़ ने जवाब दिया।

"पहले मुँह-नाक अन्दर घुसानी चाहिए।" चूहा बोला।

"मैंने मुँह-नाक घुसाने का प्रयास किया था, वह भी नहीं जाते।" लोमड़ ने कहा।

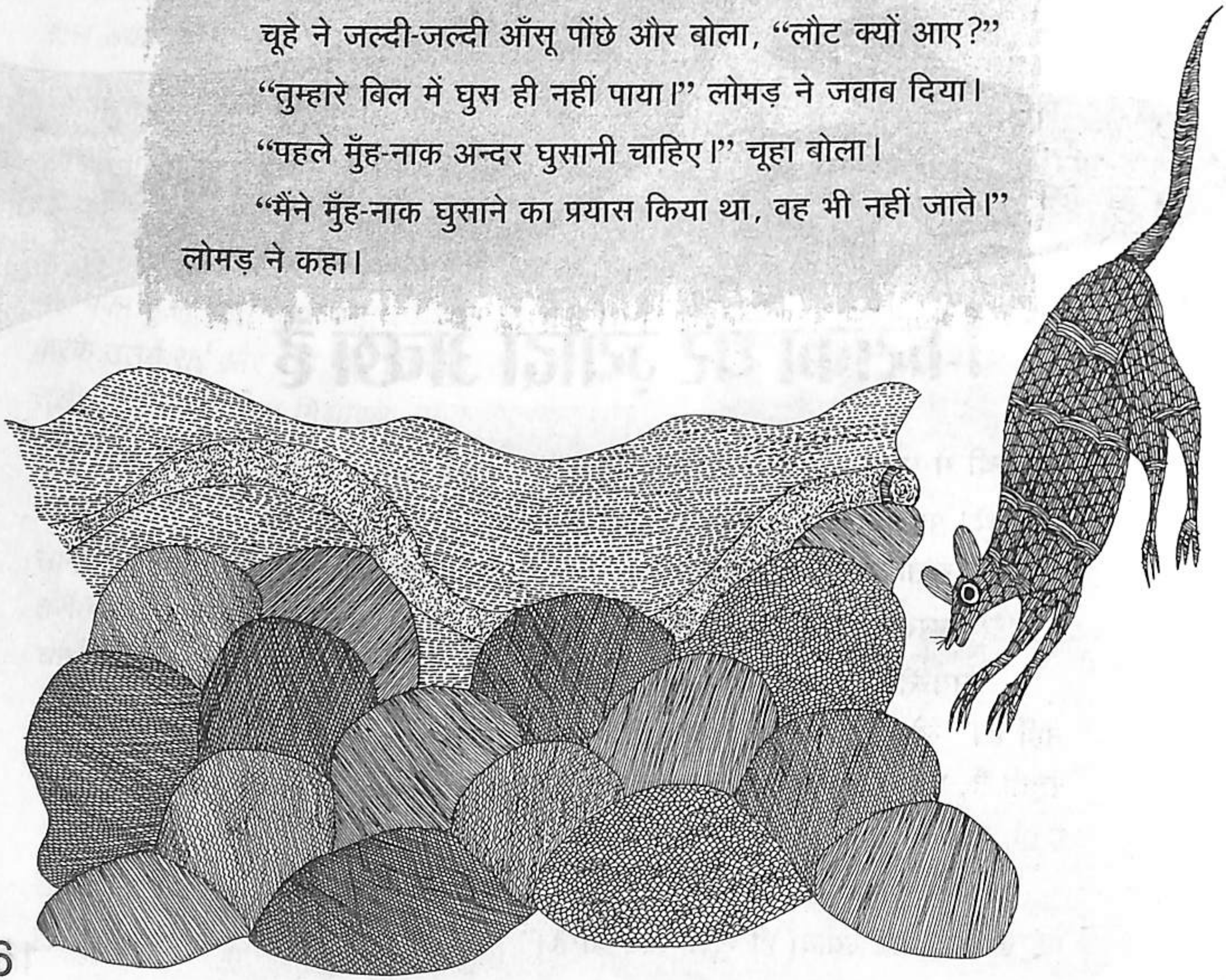

"यह नहीं हो सकता।" चूहा बोला, "चलो, मैं तुम्हारी नाक से अपनी नाक मिलाकर देखता हूँ।"

चूहा लोमड़ की नाक पर लेट गया। फिर बोला, "ज़रा सोचो तो, कितना छोटा हूँ मैं।"

लोमड़ बोला, "ज़रा देखो तो, कितना बड़ा हूँ मैं। अब हम क्या करें?"

"चलो फिर से अदला-बदला कर लेते हैं। अपने-अपने घरों में चले जाते हैं। अपने घर से प्यारा कोई घर नहीं।" चूहे ने कहा।

"हाँ ठीक है, चलो," लोमड़ ने खुश होकर कहा। अब दोनों ही संतुष्ट व खुश थे।

- राजकुमार जैन राजन

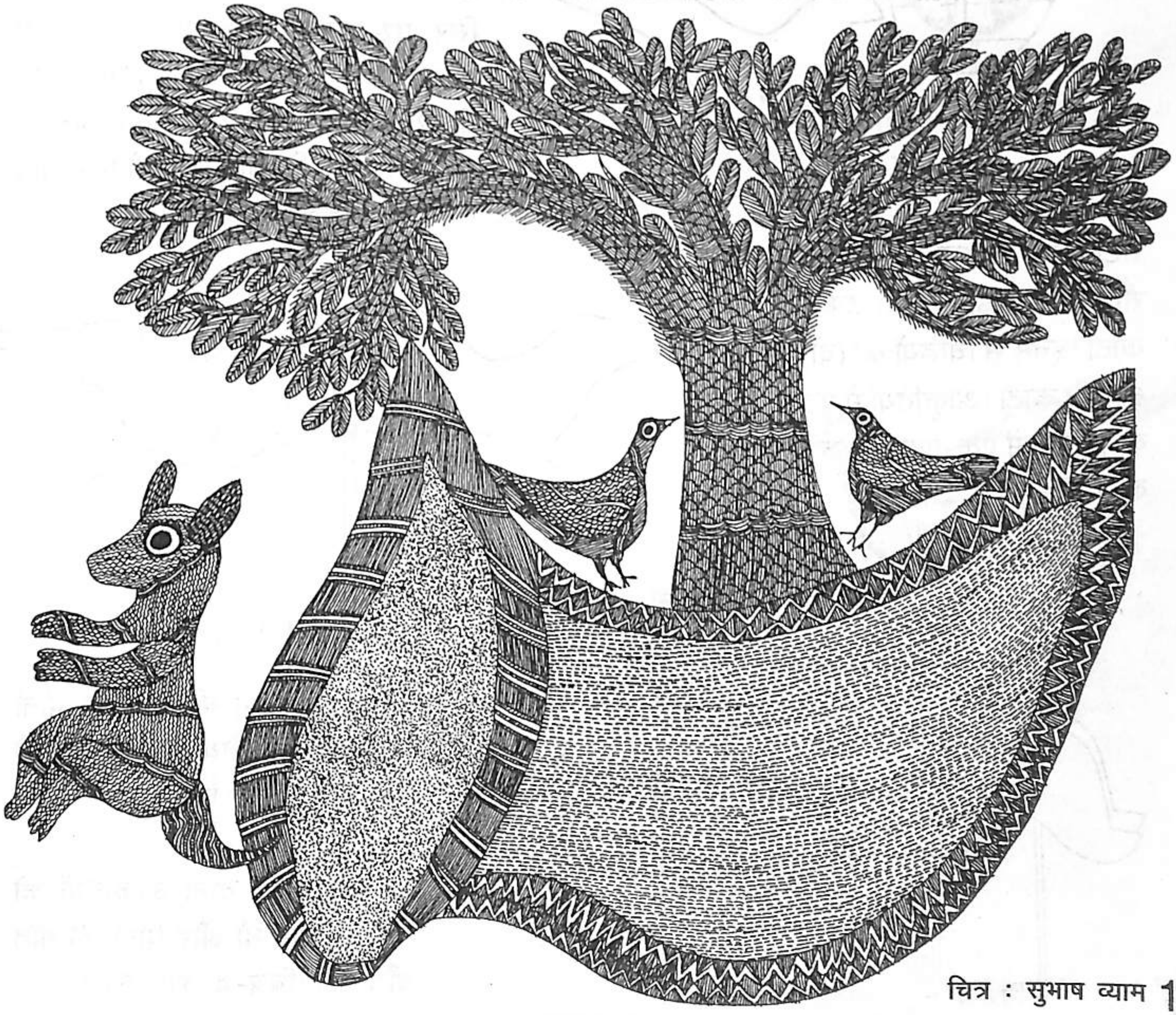

चित्र : सुभाष व्याम

उड़ती हुई चिड़िया

उड़ती हुई चिड़िया बनाने के लिए लगभग 30 सेंटीमीटर लम्बी तीन पतली छड़ियाँ, चिपकाने वाला टेप, धागा, मोटी कार्डशीट, पेंसिल, कैंची, गोंद और सुई की ज़रूरत होगी।

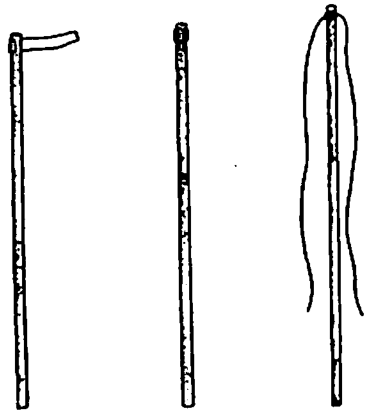

चित्र-1

1. सबसे पहले दो छड़ियाँ लो। इनके एक सिरे पर लगभग एक सेंटीमीटर चौड़ी कागज़ की पट्टी लपेटकर चिपका दो। तीसरी छड़ी के एक सिरे पर धागा लपेटकर इस तरह बाँधो कि धागे के दोनों सिरे थोड़े लम्बे लटकते रहें। (चित्र-1)

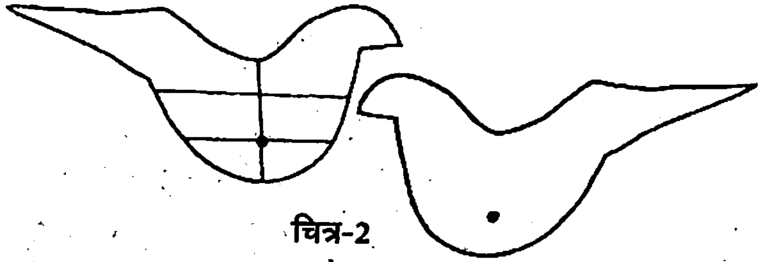

चित्र-2

2. अब कार्डशीट में से 18 सेंटीमीटर लम्बाई और 10 सेंटीमीटर चौड़ाई के दो टुकड़े काटो। इनमें से चिड़ियों की (दो) आकृति काटो। आकृतियों में पेट वाले हिस्से में एक-एक छेद कर लो। (चित्र–2)

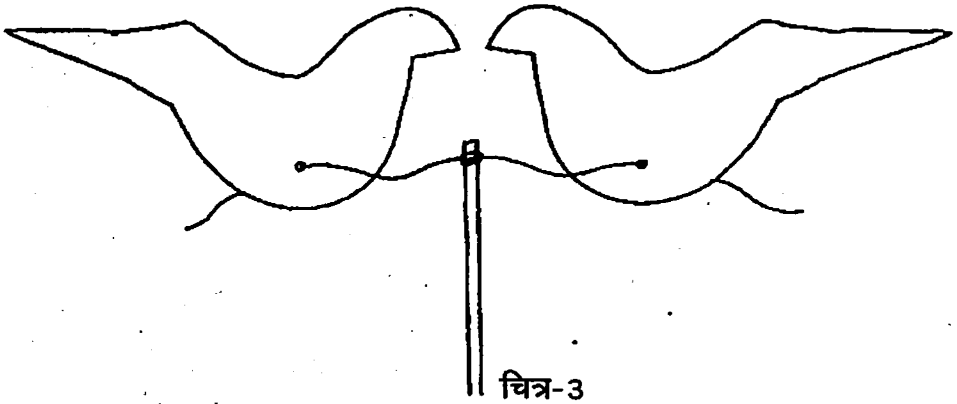

चित्र-3

3. अब छड़ी में बँधे धागे के दोनों सिरों को आकृतियों के छेद में पिरो लो। चित्र-3 की तरह।

4. इसके बाद दोनों आकृतियों को नीचे लटकने दो और धागों की गाँठ बाँध दो। (चित्र-4 और 5)

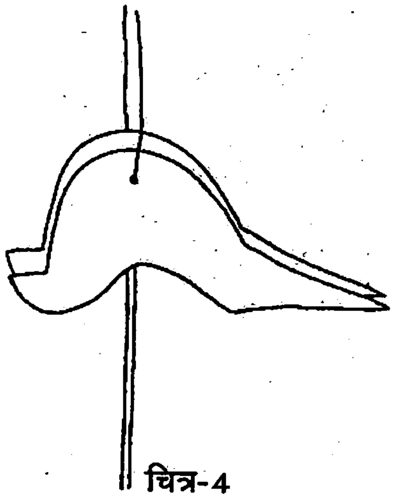

चित्र-4

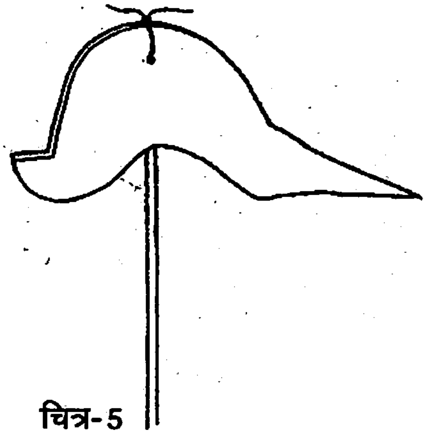

चित्र-5

5. इसके बाद चिड़ियों की दोनों आकृतियों को उठाकर सीधा कर लो। चित्र-6 की तरह। आकृति के ऊपरी के हिस्से में गोंद लगाकर दोनों हिस्सों को चिपका लो।

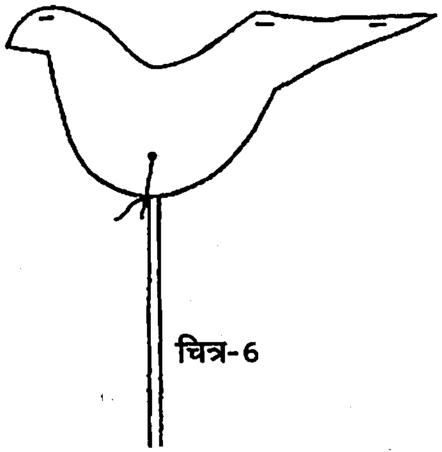
चित्र-6

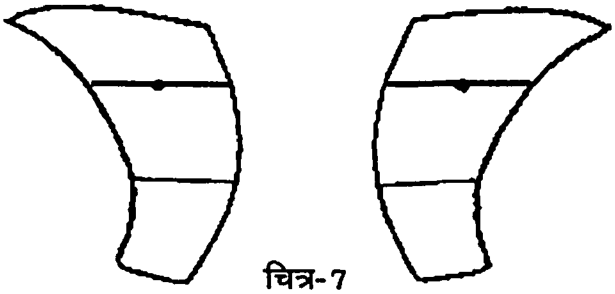
चित्र-7

6. फिर कार्डशीट में से चिड़िया के पंख की दो आकृतियाँ काटो। (चित्र-7) चित्र में दिखाए अनुसार इन पंखों को पेंसिल से तीन बराबर हिस्सों में बाँटो। फिर तीसरे हिस्से के रेखा पर बीच में एक छेद कर लो।

चित्र-8

7. बाकी दो छड़ियाँ दोनों पंखो में लगेंगी। पहले तो दोनों पंखों को चिड़िया की आकृति में पेट वाले हिस्से में चिपका दो। (चित्र-8)

चित्र-9

8. अब दोनों छड़ियों को दोनों पंखों के छेद में पिरो लो। छड़ी में लपेटे हुए कागज़ को ऊपर की तरफ रखना। (चित्र-9)

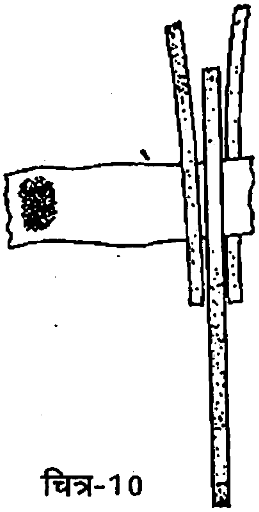
चित्र-10

9. अब तीनों छड़ियों को मिलाकर कागज़ लपेटकर चिपकाना है। (चित्र-10) कागज़ न तो बहुत कसकर लपेटना न ही बहुत ढीला। इस तरह लपेटना कि तीनों छड़ियों में से बीच वाली छड़ी को ऊपर नीचे किया जा सके।

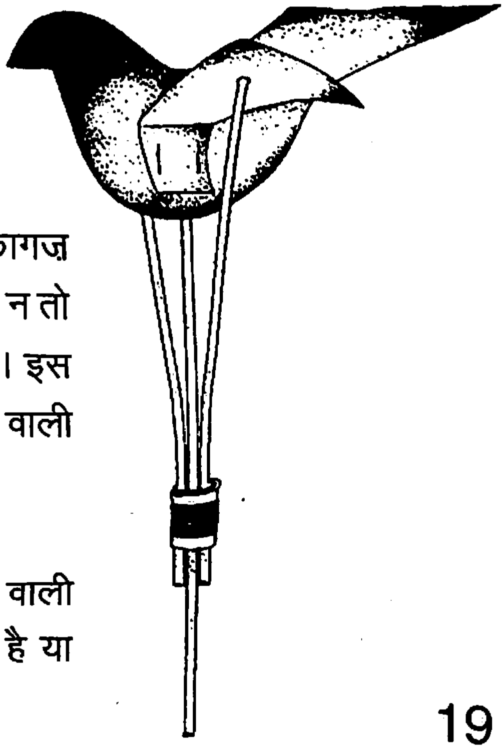

10. बस चिड़िया उड़ने को तैयार है। बीच वाली छड़ी को ऊपर नीचे करके देखो, उड़ती है या नहीं।

सूरज की बिन्दी

8 जून 2004 एक खास दिन है। इस दिन हमारी पृथ्वी, सूरज और शुक्र ग्रह एकदम सीधी रेखा में होंगे। यह घटना खगोलशास्त्रियों के लिए तो खास है ही। वे तरह-तरह के प्रयोग करेंगे। हम तो बस इस घटना को देखने की कोशिश करें, उसी में मज़ा आ जाएगा। सोचो, इससे पहले ऐसा सन् 1882 में हुआ था। यानी आज से लगभग 120 साल पहले। ज़ाहिर है कि उस समय जिन लोगों ने इस घटना को देखा था, वो आज इस दुनिया में बचे ही नहीं होंगे। अगली बार ऐसी ही घटना 5 जून 2012 में होगी।

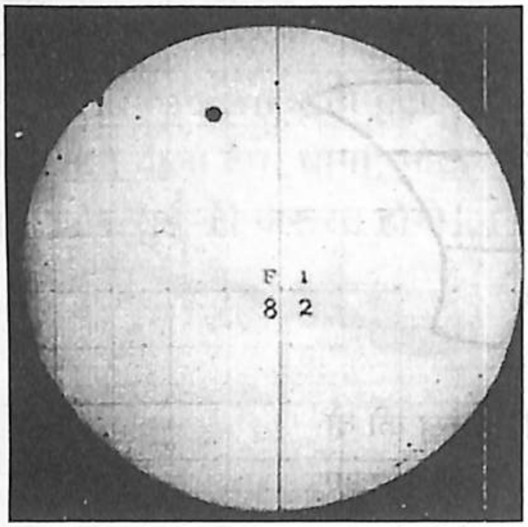

सन् 1882 में हुए शुक्र पारगमन का चित्र

अभी पिछले दिनों ही हमने एक पूर्ण चाँद ग्रहण देखा है। यह 5 और 6 मई के बीच की रात को दिखाई दिया था। भारत में लगभग सभी जगहों से यह दिख रहा था। क्या तुमने इसे देखा?

हमारे सौर मंडल के केन्द्र में सूरज है। और पृथ्वी समेत सभी ग्रह अलग-अलग गति से उसके चक्कर काट रहे हैं। पर चाँद तो पृथ्वी का उपग्रह है। इसलिए वह पृथ्वी का चक्कर काटता है। इसी चक्कर काटने के दौरान कभी-कभी ऐसा होता है कि चाँद, पृथ्वी और सूरज एक सीधी रेखा में आ जाते हैं। ऐसे में अगर पृथ्वी सूरज और चाँद के बीच में हो तो चाँद ग्रहण होता है। तब पृथ्वी सूरज की रोशनी को चाँद पर पड़ने से रोक देती है। चाँद की चमक कुछ देर के लिए पृथ्वी की परछाई में छिप जाती है।

इसी तरह अगर कभी चाँद, पृथ्वी और सूरज एक सीधी रेखा में हों और पृथ्वी और सूरज के बीच चाँद आ जाए तो सूर्य ग्रहण होता है। ऐसे में कुछ देर के लिए सूरज चाँद के पीछे छिप जाता है।

खैर, यह तो थी सामान्य सूर्य या चन्द्र ग्रहण की बात। जो घटना 8 जून 2004 को होने जा रही है, वह भी एक किस्म का सूर्य ग्रहण ही है। पर इस बार चाँद की जगह पृथ्वी और सूरज के बीच शुक्र ग्रह होगा। इस घटना को शुक्र ग्रह के पारगमन के नाम से जाना जाता है।

जब पूर्ण सूर्य ग्रहण होता है तो चाँद कुछ देर के लिए सूरज को हमारी नज़रों से पूरी तरह ढँक देता है। यह इसलिए कि चाँद पृथ्वी के बहुत करीब है। इस कारण उसकी छाया काफी बड़ी बनती है। पर शुक्र ग्रह तो चाँद की तुलना में पृथ्वी से बहुत बहुत दूर है। इसलिए उसकी परछाई बहुत छोटी बनेगी। हमें यह सूरज के ऊपर बने एक छोटे-से काले धब्बे या बिन्दी की तरह नज़र आएगी। पर पृथ्वी तो लगातार अपनी धुरी के इर्द-गिर्द घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा भी करती है। फिर शुक्र ग्रह भी सूरज के चारों ओर परिक्रमा करता है। इन सब बातों के कारण यह बिन्दी हमें एक जगह ठहरी हुई नहीं दिखेगी। ऐसा लगेगा जैसे यह बिन्दी सूरज के चेहरे को धीरे-धीरे पार कर रही है। यही है शुक्र का पारगमन।

जब हम पूरे ब्रह्मांड की बात करते हैं तो पृथ्वी, सूरज जैसे पिण्डों के बीच की दूरियाँ बहुत बहुत बड़ी होती हैं। इन्हें मापने का हमारे पास कोई सरल साधन नहीं है। और आज से 200–300 साल पहले तो आधुनिक टेलिस्कोप वगैरह भी नहीं थे! शुक्र पारगमन का महत्व यह है कि प्राचीन समय में खगोलविदों ने इसी की मदद से पृथ्वी से सूर्य की दूरी का पता लगाने की कोशिश की थी। पहली बार एडमंड हेली ने इस बात की सम्भावना के बारे में एक पर्चा लिखा था। पर चूँकि हेली के जीवनकाल में शुक्र पारगमन की कोई घटना नहीं हुई, इसलिए वे अपने द्वारा सुझाए गए प्रयोगों को कर नहीं सके।

बाद में सन् 1761 में हेली द्वारा प्रस्तावित प्रयोग किए गए और पृथ्वी से सूर्य की दूरी काफी सटीकता से निकाल ली गई। अब यही दूरी खगोलीय गणनाओं की इकाई के रूप में इस्तेमाल की जाती है। इसे खगोलीय इकाई (एस्ट्रोनॉमिकल युनिट AU) कहते हैं। तो इस बार भी 8 जून को खगोलिकी में रुचि रखने वाले लोग हेली के उसी ऐतिहासिक प्रयोग को दोहराने की कोशिश करेंगे।

तुम जब इस घटना को देखो, तो सूरज की तरफ सीधा कतई मत देखना। सूरज का सीधा प्रकाश हमारी आँखों को नुकसान पहुँचा सकता है। सूरज को देखने के लिए मायलर नाम की फिल्म के बने चश्मे इस्तेमाल किए जाते हैं। इसे वेल्डिंग के काँच से भी देखा जा सकता है। पर 14 नम्बर या उससे बड़े नम्बर के वेल्डिंग काँच के चश्मे से ही। और हाँ, वेल्डिंग के लिए इस्तेमाल हो चुके चश्मे का उपयोग नहीं करना। इसमें खरोंच वगैरह हो सकते हैं। दीवार या फर्श पर सूरज की छवि हासिल करके भी इसे देखा जा सकता है। एक आसान तरीका नीचे बता रहे हैं। तुम आज़माकर देखना।

तो याद रखना, 8 जून 2004 को। भारत में इस अद्भुत घटना को देखने का समय रहेगा सुबह 10 बजकर 46 मिनट से शाम 4 बजकर 50 मिनट तक।

सूरज का प्रतिबिम्ब बनाना

इसके लिए तुम्हें बस एक ऐसे कमरे की ज़रूरत होगी जिसकी कोई खिड़की या दरवाज़ा बाहर खुंलता हो और उसके आगे थोड़ी खुली जगह हो। कमरा ऐसा हो जिसके खिड़की या दरवाज़े पर पर्दा डालकर अन्धेरा किया जा सके। घुप्प अन्धेरे की ज़रूरत नहीं। इसके अलावा एक स्टूल, एक आइना या शीशा, थोड़ा कार्डशीट या मोटा कागज़, एक बड़ी सुई या सूजा और दूरी नापने के लिए टेप जुगाड़ लो।

आइने को कमरे के बाहर किसी स्टूल या कुर्सी पर रखो ताकि उस पर सूरज की रोशनी पड़े। फिर उसे इस तरह थोड़ा घुमाओ कि उस पर पड़ने वाले प्रकाश के कारण बनने वाली चमक खिड़की या दरवाज़े से होते हुए कमरे की किसी

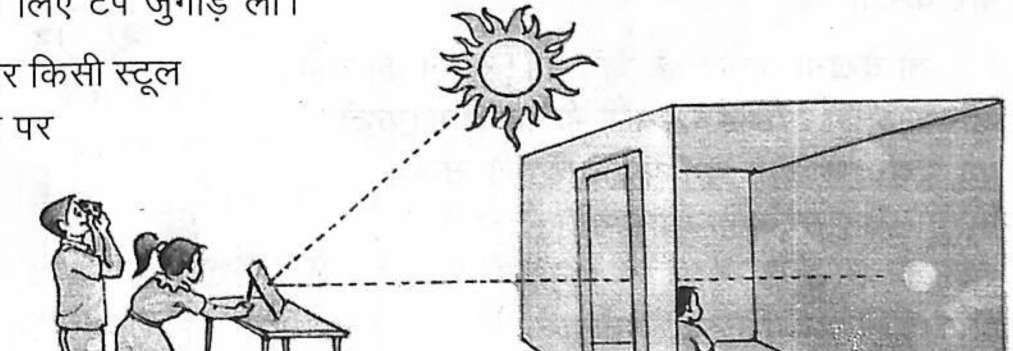

दीवार पर पड़े। यूँ तो यह खेल तुमने कइयों बार खेला होगा। एक दूसरे के मुँह पर शीशा चमकाया ही होगा! वही करना है, पर किसी के मुँह पर नहीं, अपने कमरे की दीवार पर।

अब टेप की मदद से दीवार से लगभग 30 मीटर की दूरी नाप लो। आइने को दीवार से इतनी दूरी पर रखना है। उसे यहाँ लाकर फिर से ऐसे सेट कर लो कि उसकी चमक दीवार पर पड़े। तुम देखोगे कि तुम्हारे काँच का आकार चाहे जो हो, इतनी दूरी से दीवार पर पड़ने वाली चमक का आकार गोल बन जाएगा। यह है सूरज की छवि। पर यह तो काफी धुँधली है। इसे बेहतर बनाने के लिए हम मोटे कागज़ का उपयोग करेंगे।

कागज़ आइने के आकार से बड़ा होना चाहिए। इस पर सुई या सूजे की मदद से एक सुराख बना लो। इस छेद का व्यास लगभग आधा सेंटीमीटर होना चाहिए। तुम चाहो तो इसके लिए पंच करने वाली मशीन का उपयोग भी कर सकते हो। अगर तुम्हारे पास कागज़ में छेद करने वाला पंच हो तो उससे भी छेद बना सकते हो। फिर कागज़ को दर्पण के सामने लगभग 30 सेंटीमीटर की दूरी पर रखो। कागज़ सूरज से टकराकर वापस लौटने वाले प्रकाश का रास्ता रोकेगा। ध्यान रखना कि कागज़ को हमें आइने से टकराकर जाने वाली प्रकाश किरणों के लम्बवत रखना है। इस काम के लिए तुम किसी बड़े की मदद भी ले सकते हो।

अब कमरे की दीवार पर बन रही सूरज की छवि को देखो। यह अब भी उतनी ही बड़ी होगी जितनी बड़ी छवि सीधे दर्पण से बन रही थी। जिस जगह पर यह छवि बन रही है, वहाँ पर तुम एक सफेद कागज़ भी चिपका सकते हो। इससे वह और साफ दिखाई देगा। नापकर देखो, क्या इस छवि का व्यास लगभग 30 सेंटीमीटर है? यह सारी तैयारी तो तुम्हें 8 जून से 2–4 दिन पहले से ही कर लेनी होगी। नहीं तो आखिरी समय में गड़बड़ी भी हो सकती है।

8 जून को जब तुम यह प्रयोग करोगे तो तुम्हें सूरज की छवि के ऊपर से लगभग 1 सेंटीमीटर व्यास की एक काली छाया या बिन्दी गुज़रती हुई दिखाई देगी। इसकी चाल बहुत धीमी होगी। सुबह लगभग पौने ग्यारह बजे से लेकर शाम के पाँच बजे तक, यानी लगभग पाँच-छह घंटों में यह हमारे छोटे-से प्रतिबिम्ब को पार करेगी!

तो देखना ज़रूर, 8 जून को। सूरज की छवि और शुक्र की परछाई के व्यास भी नाप लेना। पहले को दूसरे से भाग देने पर तुम्हें जो संख्या मिलेगी, वह सूरज के व्यास की तुलना में शुक्र की छाया के व्यास का अनुपात होगा। हमें चिट्ठी लिखकर बताना कि कैसा रहा शुक्र के पारगमन का तुम्हारा दर्शन।

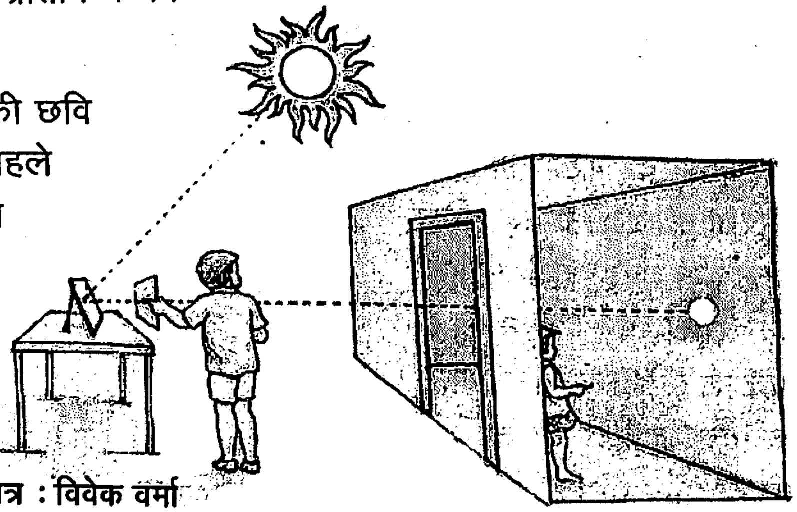

चित्र : विवेक वर्मा

पिनहोल कैमरा

इस बार हमने शुक्र के पारगमन वाले लेख में सूरज का प्रतिबिम्ब बनाकर उसे देखने का एक तरीका बताया है। यहाँ हम तुम्हें अपने आसपास की चीज़ों के प्रतिबिम्ब बनाने के लिए एक और तरीका बता रहे हैं - पिन होल कैमरा बनाकर। शुक्र के पारगमन वाले प्रयोग में भी हमने इसी सिद्धांत का उपयोग किया है। पर इसमें एक दिक्कत है। प्रतिबिम्ब हमेशा उलटा बनता है। चाँद-तारे, सूरज तो गोल हैं, उसमें इसका कोई खास फर्क नहीं पड़ता। पर जब तुम पिनहोल कैमरे से अपने आसपास की चीज़ों के प्रतिबिम्ब बनाओगे तो देखना - सब उलटा-पुलटा दिखेगा!

चलो आगे बात करने से पहले सामान इकट्ठा कर लें। हमें एक बड़े-से कार्डबोर्ड के डिब्बे या खोखे की ज़रूरत पड़ेगी। ऐसा डिब्बा जिसमें छेद वगैरह न हों, ताकि अनचाही रोशनी अन्दर न जा सके। खूब सारा काला कागज़, कैंची या ब्लेड, बड़ी सुई स्केल और आर-पार दिखने वाले ट्रेसिंग शीट की भी ज़रूरत पड़ेगी।

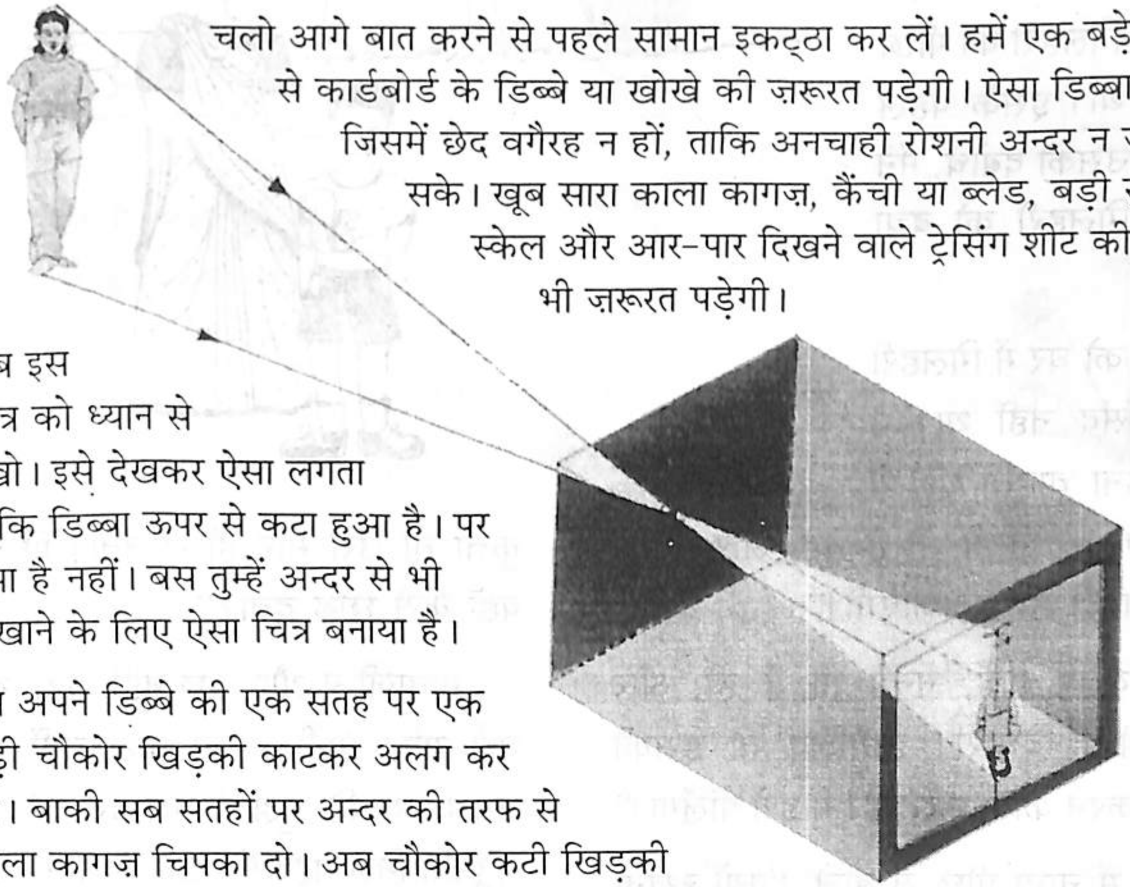

अब इस चित्र को ध्यान से देखो। इसे देखकर ऐसा लगता है कि डिब्बा ऊपर से कटा हुआ है। पर ऐसा है नहीं। बस तुम्हें अन्दर से भी दिखाने के लिए ऐसा चित्र बनाया है।

तुम अपने डिब्बे की एक सतह पर एक बड़ी चौकोर खिड़की काटकर अलग कर लो। बाकी सब सतहों पर अन्दर की तरफ से काला कागज़ चिपका दो। अब चौकोर कटी खिड़की पर एक ट्रेसिंग कागज़ चिपका दो। ध्यान रखना ट्रेसिंग कागज़ अच्छी तरह, एकदम सीधा चिपके। उस पर सल न पड़े हों।

डिब्बे की इस दीवार के ठीक सामने वाली दीवार पर एक छोटा-सा छेद बना लो। बस तुम्हारा पिनहोल कैमरा तैयार! अपने कैमरे को बाहर खुले में ले जाओ। यह तेज़ रोशनी में ही अच्छा काम करता है। इसे किसी ऐसी जगह पर टिका दो जहाँ सुराख वाली सतह के सामने पेड़ या ऐसा ही कुछ हो। और देखो कैसी छवियाँ दिखाता है यह तुम्हें।

रानी की मुसीबत

शंकर

एक बार मैं अपनी मौसी के घर गया हुआ था। एक दिन बाग में एक कुत्ता एक गिलहरी का पीछा कर रहा था। इसके पहले कि कुत्ता उसको दबोचे, मैंने भागकर गिलहरी को बचा लिया।

नानी को घर में गिलहरी रखना पसंद नहीं था। वे उसे छोड़ना चाहती थीं। वे कहने लगीं - "नन्ही-सी है यह, और बीमार भी है। जल्दी ही मर जाएगी।"

मैंने कहा, "हाँ, नन्ही तो है ही, और बीमार भी है बेचारी। इसीलिए तो इसकी देखभाल करने की ज़रूरत है। मैं इसे पालूँगा।"

इतने में नाना पीछे से बोले, "क्यों रखना चाहते हो इसे? इसके माँ-बाप न जाने कितना रो रहे होंगे बेचारे, क्योंकि तुम उनके बच्चे को उनसे छीन लाए।"

मैंने कहा, "लेकिन नानाजी, मैंने इसे मौसी के घर में एक कुत्ते के पंजे से बचाया था। कुत्ता तो उसे मार ही डालता। फिर मैं उसे वहाँ कैसे छोड़ देता?"

नानाजी ने और कुछ नहीं कहा, वह बाहर चले गए। नानी ने भी कुछ नहीं कहा। मैं समझ गया कि मुझको गिलहरी को रखने की अनुमति मिल गई। मैंने उसका नाम रखा रानी।

घर में रानी को रखने लायक कोई जगह नहीं थी। रात भर तो मैंने उसे एक कागज़ के बक्से में रखा। हवा के लिए उसमें छेद बना दिए। दूसरे दिन मामाजी उसके लिए एक चिड़ियों वाला पिंजड़ा उठा लाए। मैंने उसी में

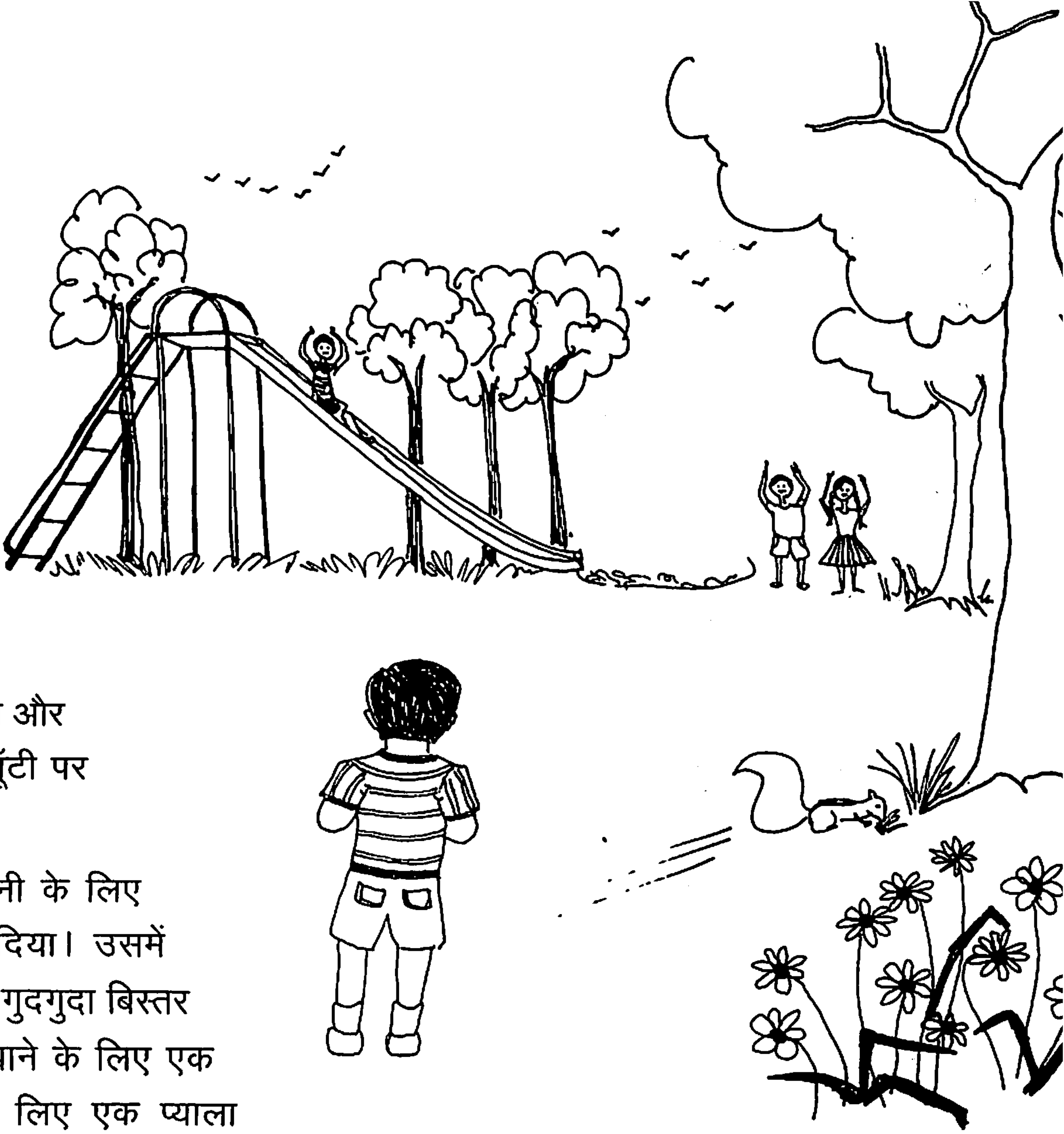

रानी का घर बना दिया और अपने कमरे में एक खूँटी पर टाँग दिया।

मैंने पिंजड़े में रानी के लिए अच्छा-सा घर बना दिया। उसमें उसके लिए एक नन्हा गुदगुदा बिस्तर लगा दिया। उसके खाने के लिए एक तश्तरी और पीने के लिए एक प्याला रख दिया।

पहले-पहल तो मैं ही उसको खाना खिलाता था। कुछ दिनों बाद वह अपने आप ही खाने लगी। मैं उसको दूध, फल और मेवे के टुकड़े खिलाता था।

एक दिन रानी और मैं बाग में गए। बाग में जाकर वह बहुत खुश हुई, और फूल-पौधों पर दौड़ती-भागती रही। अचानक एक पेड़ पर चढ़ गई और डालों-पत्तों के बीच खो गई। जब मैंने उसका नाम लेकर पुकारा तो वह नीचे उतर आई। मैं समझ गया कि रानी को घर से अच्छा बाग में लगता है।

जल्दी ही रानी सयानी हो गई। अब वह दूसरी गिलहरियों की तरह पूरी आज़ाद थी। हमारे घर में अब भी उसका अपना नन्हा-सा घरोंदा था। वहाँ वह सिर्फ रात को सोने आती थी।

फिर एक बार मैंने उसे हफ्तों नहीं देखा। एक दिन मैंने उसे बाग में देखा। पर वह अकेली नहीं थी। वह एक दूसरी गिलहरी के साथ खेल रही थी। मैंने रानी को पुकारा। वह पहले तो झिझकी, फिर मेरे पास दौड़ी आई। उसकी साथी एक पेड़ पर बैठी हमें ताकती रही।

उस दिन रात को मैंने पता लगाना चाहा कि रानी घर में है या नहीं। मैंने उसको आवाज दी। वह नहीं आई। मैंने पिंजड़े में झाँककर देखा। पिंजड़ा खाली पड़ा था। वह चली गई थी।

कई महीने बीत गए। रानी अब बहुत कम दिखाई देती। मैं उसको करीब-करीब भूल ही गया था।

एक दिन सवेरे किसी गिलहरी को बार-बार चीखते सुना। फिर मैंने एक गिलहरी को अपनी ओर दौड़ते देखा। वह रानी ही थी। वह पहले मेरी ओर आई। फिर घर के पिछवाड़े की ओर भागी। मैं समझ गया कि रानी मुसीबत में है। वह मदद चाहती थी। मैं भी उसके साथ पिछवाड़े की ओर भागा। वहाँ मैंने देखा कि एक साँप ने एक गिलहरी को दबोच रखा है।

मैं चिल्लाया, "दौड़ो, दौड़ो।" मेरी चीख-पुकार सुनकर मामा जी भागे आए। गिलहरी को बचाने की कोशिश करने लगे। उन्होंने एक लंबा बाँस लेकर उसके एक सिरे से साँप को धर दबाया। दर्द से छटपटाकर साँप ने गिलहरी को छोड़ दिया। जैसे ही बाँस हटाया, साँप नौ-दो ग्यारह हो गया।

गिलहरी ज़मीन पर बिना हिले-डुले पड़ी थी। मैंने उसे धीरे से उठा लिया। वह मर गई थी। मैं पहचान गया कि वह रानी की दोस्त थी। मुझे बहुत दुख हुआ कि हम लोग उसे नहीं बचा पाए। बेजान गिलहरी को वहीं छोड़, मैं घर लौट पड़ा।

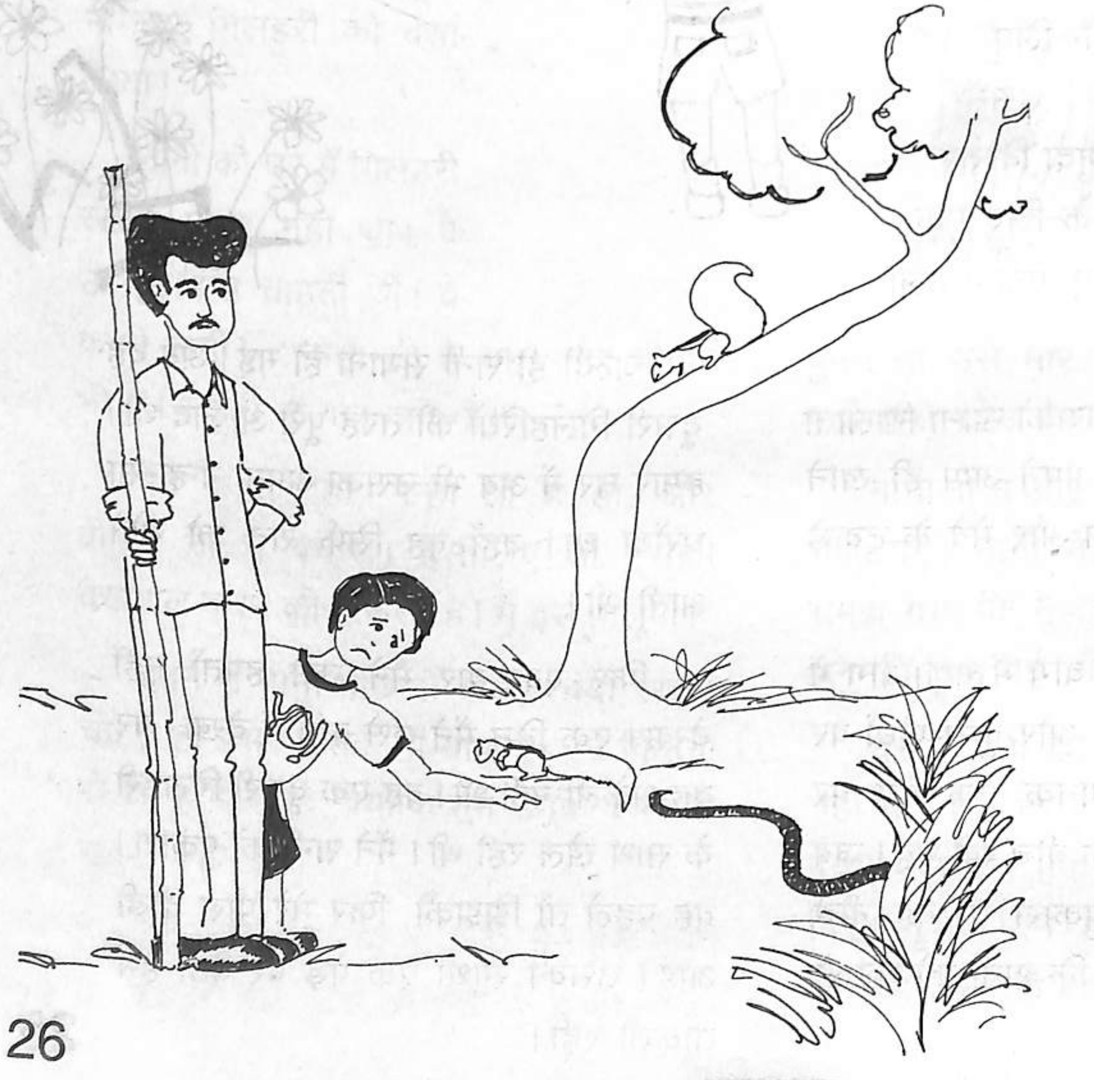

रानी हमें एक पेड़ पर से देख रही थी। वह नीचे आई और बड़ी देर तक अपनी दोस्त के शरीर को सूँघती रही। वह समझ गई कि उसकी दोस्त मर गई है। फिर रानी पेड़ पर वापस चली गई।

अचानक एक बड़ी-सी चील तीर की तरह नीचे उतरी और झपट्टा मारकर मरी हुई गिलहरी को पंजे में दबा ले उड़ी। रानी ज़ोर से चीख उठी। हम लोग बेबस खड़े-खड़े देखते ही रहे। कर भी क्या सकते थे?

रानी अचानक रोती हुई और ऊपर भाग गई, मानो एकाएक किसी चीज़ से डर गई हो। दौड़ती हुई वह पेड़ की चोटी पर बने एक घोंसले में घुस गई।

मामा ने कहा, "देखा न राजा, वही है रानी का घर। मुझे लगता है कि उसका बच्चा

चित्र : ऋचा

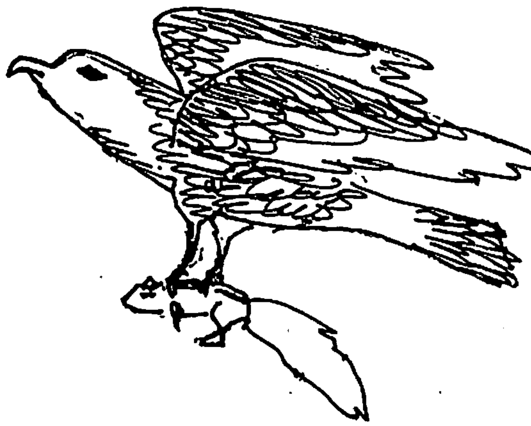

घोंसले के अंदर है। उसे अचानक बच्चे की याद हो आई थी, इसीलिए वह भागकर ऊपर चढ़ गई।"

मैं तो सारा दिन ही बहुत उदास रहा। शाम को भी मैं कमरे में अकेला बैठा था। मैंने गिलहरी की आवाज़ सुनी। मैंने देखा कि सामने रानी थी। अपने नन्हे बच्चे को मुँह में दाबे हुए। आगे आकर उसने बच्चे को ज़मीन पर रख दिया। मैं यह भी न समझ सका कि वह अपने बच्चे को लेकर मेरे पास क्यों आई।

मैंने नाना, नानी और मामा को बुलाया। वे लोग तुरंत आए। रानी के बच्चे को देखकर उन्हें ताज्जुब हुआ। मामा जी ने कहा, "रानी को शायद चील और साँप का डर है। वह चाहती है कि तुम उसके बच्चे को बचा लो।"

मैं अंदर जाकर पिंजड़ा उठा लाया और उसी जगह पर लटका दिया। गिलहरी के बच्चे को पिंजड़े में रख दिया। मामा ने जैसा कहा था, मैंने वैसा ही किया। रानी ने बच्चे को पिंजड़े में देखा तो उसके पास जाकर उसे दूध पिलाने लगी।

केनजागा

एच एस राधा

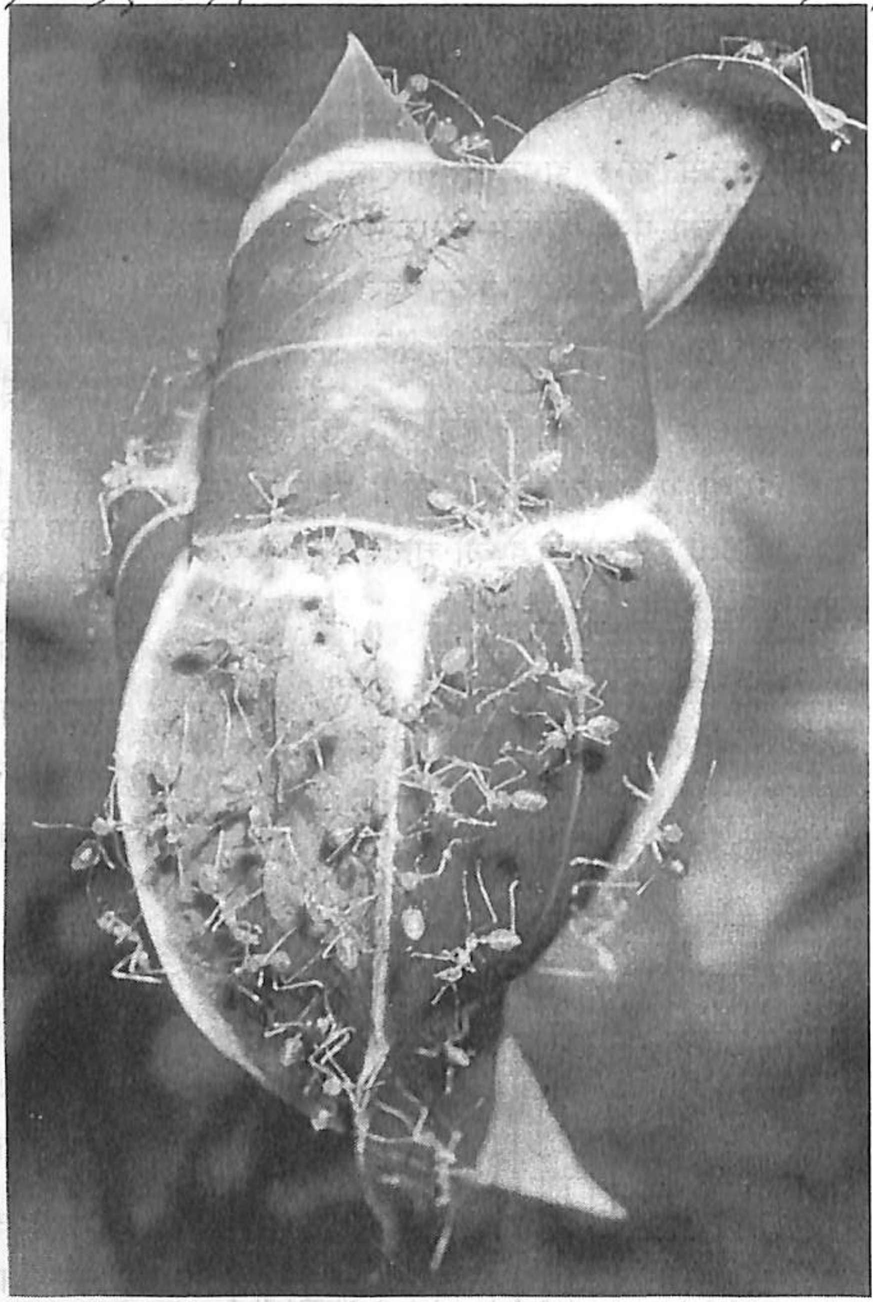

हर साल मैं बड़े चाव से अपने बगीचे के आम के पेड़ को देखा करती थी – बौर ढूँढते हुए। माँ और बाबा का भी यही हाल था। पर ऐसा लगता था कि हमारे आम के पेड़ में सिर्फ दो ही चीज़ें फलती–फूलती थीं – पत्तियाँ और केनजागा। केनजागा नहीं जानते? हमारे इलाके में पेड़ों पर रहने वाली बड़ी–बड़ी लाल–भूरी चींटियों को केनजागा कहते हैं। शायद तुम्हारे तरफ इन्हें बरबूटा कहते हैं।

वैसे तो हम सिर्फ तभी केनजागा की फिक्र करते थे जब हमारे ऊँचे–ऊँचे नारियल के पेड़ों से नारियल तोड़ने वाला बन्दा आता था। वो इसलिए कि ये बरबूटे नारियल के पेड़ों पर भी रहते हैं। नारियल तोड़ने वाला हमेशा इनकी शिकायत करता। बरबूटे भी नारियल तोड़ने की उसकी कोशिशों से परेशान होते होंगे। पर बिना उन्हें परेशान किए नारियल तोड़ना भी तो असम्भव था।

यह तो मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया कि ये केनजागा बड़े–बड़े होते हैं, और लाल–भूरे रंग के। हम इन्हें बचपन से ही देखते आए हैं – बगीचे में, अपने घोंसलों के आसपास, हमेशा अपने काम में मगन। ये पेड़ों के पत्तों से घोंसला बनाते हैं। पर बचपन से ही हमने यह भी सीख लिया था कि इन्हें कभी परेशान नहीं करना। वर्ना इनके काटने के शिकार बनना बहुत बुरी सज़ा थी।

जब भी नारियल तोड़ने वाला बन्दा हमारे बूढ़े नारियल के पेड़ों पर चढ़ता था, हमें उसकी फिक्र होने लगती थी। ये पेड़ लगभग 30 फीट ऊँचे थे। समझ सकते हो, लगभग तीन मंज़िले मकान जितने ऊँचे। वह बन्दा तेज़ी से इन पेड़ों पर चढ़ता, नारियल तोड़ता, पत्तों को छाँटता और फिसलता हुआ नीचे आ जाता। और इस पूरे समय में वह लगातार केनजागा को अपने शरीर से झाड़ता भी जाता था।

एक बार हमारे पेड़ पर बौर आए और आखिरकार दो आम लगे। अब हमने सोचना शुरू किया कि इन आमों को तोड़ेंगे कैसे? हमारा पेड़ कोई 15 फीट ऊँचा रहा होगा। और उसमें केनजागा के दो घोंसले थे। तो इनसे बचकर आम कैसे तोड़े जाएँ? हमने देखा कि जिन दो डँगालों पर घोंसले थे, आम उनमें नहीं लगे थे। एक विचार यह आया कि क्यों न आमों को बचाकर बरबूटों के घोंसले वाले दोनों डँगाल काट दिए जाएँ। आमों के लालच में ऐसे ही कई ख्याल मन में आते थे।

फिर एक दिन मैंने इन बरबूटों को घोंसला बनाते देखा। बहुत सारे बरबूटे एकदम अनुशासन से लाइन लगाकर पत्तों को पास पास पकड़े हुए थे। कुछ और बरबूटे अपने मुँह में सफेद–सफेद कुछ पकड़े हुए थे। इससे ये पास–पास पकड़ी हुई पत्तियों को आपस में चिपका रहे थे। कई सारे पत्तों के साथ ऐसे ही करते–करते उन्होंने एक गोल लम्बोतरा–सा घोंसला बनाया। यह सब देखकर मुझे इतना मज़ा आया कि मैं इनके बारे में और जानकारी ढूँढने लगी। मुझे पता चला कि बरबूटे अपने मुँह में सफेद–सफेद जो चीज़ पकड़े थे, वो असल में इन्हीं के अण्डों में से निकले लार्वा थे। लार्वा जानते हो न, चींटी के जीवनचक्र की इल्ली अवस्था। बरबूटे सिर्फ लार्वा अवस्था में ही एक सफेद चिपचिपा रेशम जैसा पदार्थ बना पाते हैं। इसलिए घोंसला बनाने के लिए वयस्क बरबूटे इन्हें पकड़कर पत्तियों के किनारों पर फेरते हैं। इतनी ऊँची डँगालों पर कितनी मेहनत से बनाते हैं ये अपना घर।

अब तो डँगालें काटकर बरबूटों को बेघर करने को मन तैयार नहीं था। तो हमने कुछ और जुगत भिड़ाई। हमने एक लम्बी डण्डी के सिरे पर एक जालीदार थैला बाँधा और उसकी मदद से दोनों आम तोड़ लिए। केनजागा अब भी शान से हमारे पेड़ों पर रह रहे हैं। और हम अब भी उनके घोंसलों को निहारते हैं – अलबत्ता दूर से ही!

दो पत्तियों को पास–पास लाने के लिए सर्कस जैसा करतब करते बरबूटे

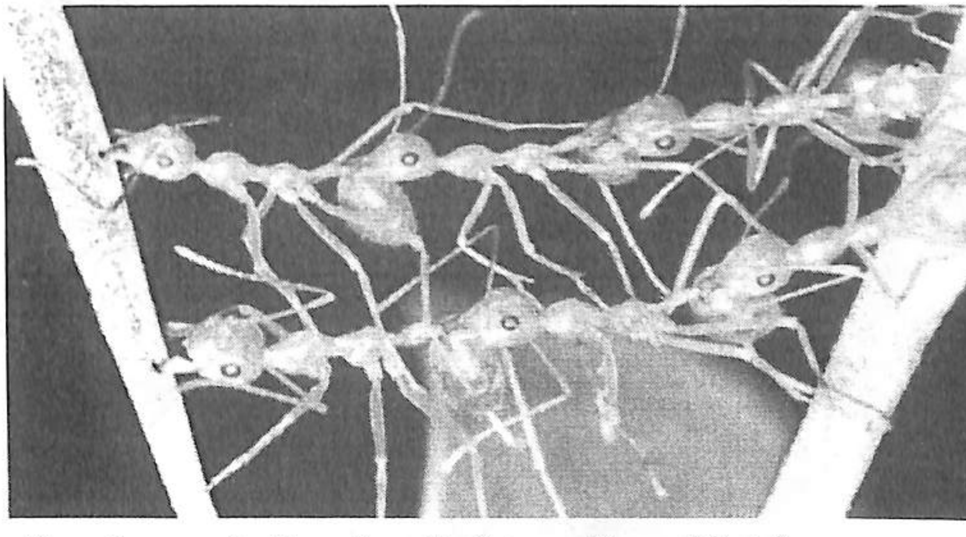

चित्र : नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी की 'हाउ एनिमल्स बिहेव' से साभार

चित्र-पहेली

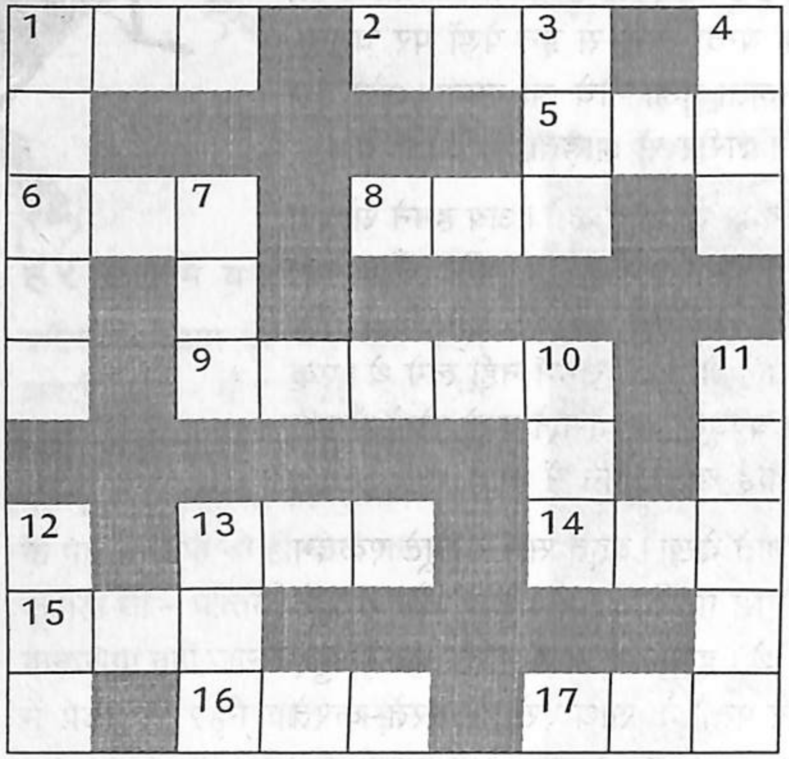

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. 07. मई. 2004

2.

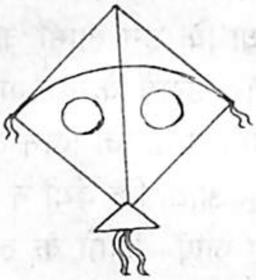

5.

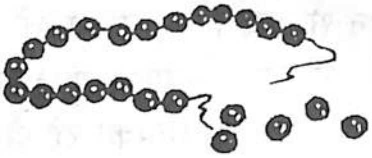

6.

8.

9.

13.

14.

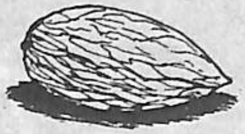

के रंग का

15.

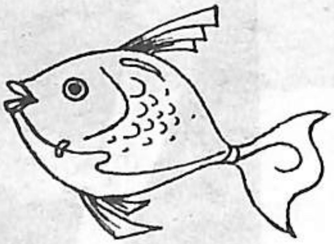

16.

17.

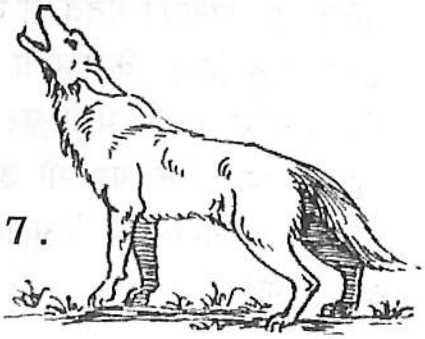

संकेत : ऊपर से नीचे

1.

3.

4.
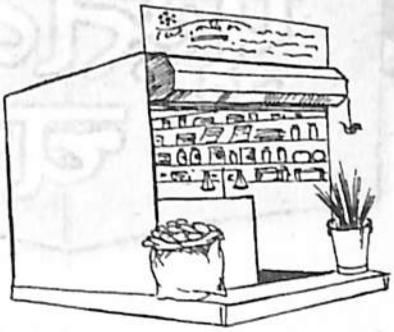

7.
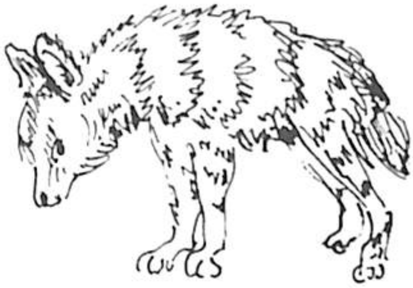

10. अदरक बादाम में छिपा है ज़मीन के टुकड़े के लिए एक उर्दू शब्द

11.
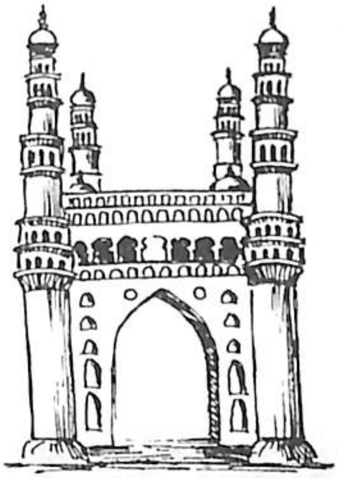

12.
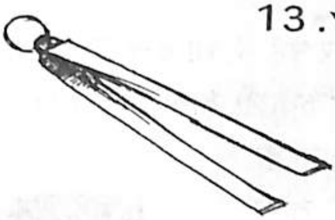

13.
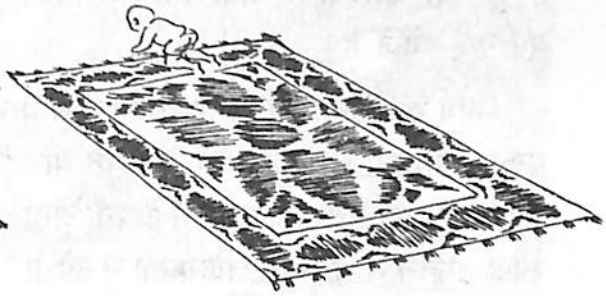

अप्रैल अंक के माथापच्ची व चित्रपहेली के हल

1. 16 नम्बर का धागा।

3. 36

यह अंकों के वर्गों का क्रम है।

5.
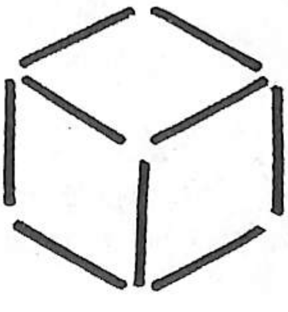

प		ऐ		ग		कि	ता	ब
हि	र	न		जा	ला		ज़ि	
या		क		न		सि	या	र
	बौ		ना	न	क			स
अ	ना	मि	का		क	त	र	ना
ला			म	क	ड़ी		ग	
व	सी	म		ट		फि		छि
	स		रा	ह		र	ह	ल
क	म	ल		ल		की		का

इस बार पाँच किताबों से तुम्हारी मुलाकात करवाते हैं। ये किताबें तुम्हें मज़ेदार कहानियाँ बताएँगी। और तुम्हें बहुत सारे चित्र भी मिलेंगे, जिनमें तुम अपने मन माफिक रंग भर सकते हो। इनमें से चार किताबों की हीरो है एक गाय, जिसका नाम है किकली। तुम्हारे बराबर की उसकी एक दोस्त है तानी। ऐसे इन किताबों में कँगारू हैं, कुत्ते हैं, बछिया हैं, सर्कस है, चूहे, बिल्ली और हमारे आसपास की कई चीज़ें हैं।

अब जब इन पाँच किताबों की बात कर रहे हैं, तो तुम्हें इनकी एकाध कहानी भी सुना देते हैं। एक बार किकली तानी के स्कूल गई। वहाँ उसने देखा कि तानी अपनी सहेलियों के साथ खेलने में मगन है। किकली ने सोचा... तानी तो कहती है कि स्कूल में पढ़ने जाते हैं! और यहाँ देखो कैसे अपने दोस्तों के साथ खेल रही है।

किकली के मन में भी खेलने का ख्याल आया। पर वापस घर आई तो देखा कि उसकी सारी दोस्त सुस्ता रही हैं। बस एक बछिया खड़ी मिली। किकली ने उसे ही धक्का देकर कहा... अरे भागो, भागो हम पकड़ा-पकड़ी खेलेंगे। बछिया ने कुछ और समझा और डरकर भाग गई। पर किकली कहाँ मानने वाली थी। उसने भी दौड़ लगा दी।

तानी के पिताजी ने इसके लिए किकली को सज़ा दी। उसके पाँव रस्सी से बाँध दिए। किकली रोने लगी। जब तानी आई तब कहीं उसे राहत मिली। दोनों ने जी भरकर खेला।

ऐसे ही एक कहानी में किकली को एक बार किताब पढ़ने का मन करता है। किताब लेने वह बाज़ार जाती है। इसके बाद कई मजेदार घटनाएँ होती हैं। इनमें से एक किताब '**ममा बत्तख सर्कस में**' बड़ी मजेदार है।

ये पाँचों किताबों के कवर रंगीन हैं। अंदर के पन्ने तो तुम्हें ही रंगीन करने हैं। कहानियाँ तुम्हें भाएँगी। बस कुछ जगह कहानियों में वही घिसीपिटी जुमलेबाज़ी दिखती है, जो तुम अक्सर देखते हो। हमारे आसपास के समझदार बड़े एक-दो साल की उमर में ही बता देते हैं कि फलाँ बच्चा बड़ा होकर होशियार बनेगा। फलाँ बुद्धू निकलेगा। एक कहानी में किकली के बारे में भी ऐसा ही कुछ कहा गया है।

एक कहानी में स्कूल और स्कूली किताब की ऐसी छवि पेश की गई है जैसे ये दोनों चीज़ें बच्चों को बहुत ही पसंद हैं। चित्रों में यह बनावटीपन कुछ ज़्यादा ही दिखता है। चाहे कवर के चित्र हों या अंदर के चित्र, सब के सब में तुम्हें ढर्रेबाज़ी नज़र आ जाएगी। सभी चित्र कॉमिक शैली में हैं। पर कई जगह तो चित्र कुछ और कहते हैं, कहानी कुछ और बताती है। चित्रों में आसपास को कुछ रूखे तरीके से उकेरा गया है। कई जगह ज़रूरी चीज़ों को अनदेखा करके बेवजह कई और चीज़ों को दिखाया गया है। पात्रों का चित्रण सबसे ज़्यादा निराश करता है। कँगारू का चित्र इनमें सबसे ज़्यादा खटकता है। इन सब खामियों के बावजूद कहानियाँ पढ़ने लायक हैं। हमें उम्मीद है तुम अपने रंगों से इन्हें बेहद आकर्षक किताबों में बदल लोगे। और तब ये कहानियाँ और मज़ेदार लगेंगी।

इन पाँचों किताबों के चित्र नीतिका टण्डन ने उकेरे हैं। और किकली सीरीज़ की चार किताबों की लेखक वैजयन्ती सावंत टोणपे हैं। 'ममा बतख सर्कस में' किताब की लेखक रेचल मेकबीन हैं। हर किताब बीस रुपए की है। यानी पाँच किताबें सौ रुपए की होंगी। बीस पन्नों की किताब के हिसाब से कीमत ज़्यादा है।

तुम इन किताबों को मँगाने के लिए इस पते पर लिख सकते हो....

स्कॉलास्टिक इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड
29 उधोग विहार, फेज–1 गुड़गाँव 122016

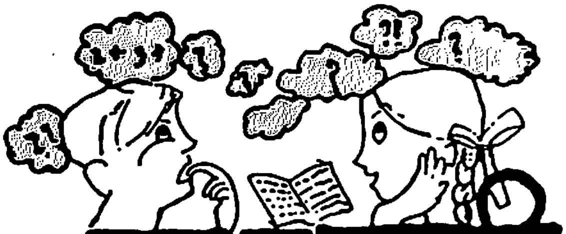

माथापच्ची

1.

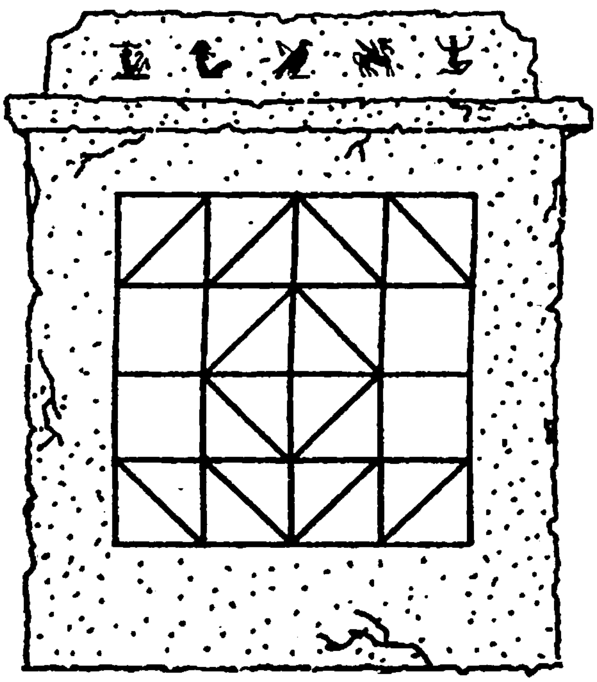

जरा गिनो कितने वर्ग हैं इस आकृति में? और तिकोने कितने?

2.

एक संख्या है जिसमें आठ जोड़ो। और फिर आठ घटा दो। बची संख्या में आठ का गुणा कर दो और फिर आठ से भाग दो। तो चार बचता है। तुम जानते हो हम कौन सी संख्या के बारे में बात कर रहे हैं?

3.

$$\frac{4}{61} \quad \frac{5}{52} \quad \frac{6}{63}$$

$$\frac{7}{94} \quad \frac{8}{46} \quad \frac{9}{?}$$

? की जगह तुम कौन सी संख्या रखोगे?

4.

यहाँ काजल ने अपनी मनपसन्द कविता लिखी है। पर अपनी बनाई संकेतों की भाषा में। क्या तुम उसके इस खास भाषा कै तोड़ ढूँढकर पता लगाओगे कि कौन-सी कविता है यह? चलो कुछ हम बता देते हैं। इसमें हिंदी के स्वरों (अ, आ, इ, ई, आदि) को वैसा ही रखा है और 'स = म' है।

सनकी पर शी खारी दै
पीतर उगशा धारी दै
दाफ कलाओ वख पामी दै
यादख रिशाको सख पामी दै

5.

एक व्यक्ति अपनी यात्रा के दौरान कुछ इस तरह चला। पहले दिन सात मील और उसके बाद हर दिन पिछले दिन से चार मील ज़्यादा चलता। आखिरी दिन वह पूरे 51 मील चला। क्या इतनी जानकारियों से तुम दो बातों का पता लगा सकते हो। एक तो वह कुल कितने मील चला? और उसने कितने दिनों में यह यात्रा पूरी की?

6.

7.

तुम्हारे पास दो लोहे के छड़ हैं। दोनों बिलकुल एक जैसे दिखते हैं पर एक चुम्बक है और दूसरा सामान्य लोहा है। क्या तुम बिना किसी और चीज़ की मदद से पता लगा सकते हो कि इन दो छड़ों में से कौन-सा लोहा है और कौन-सा चुम्बक?

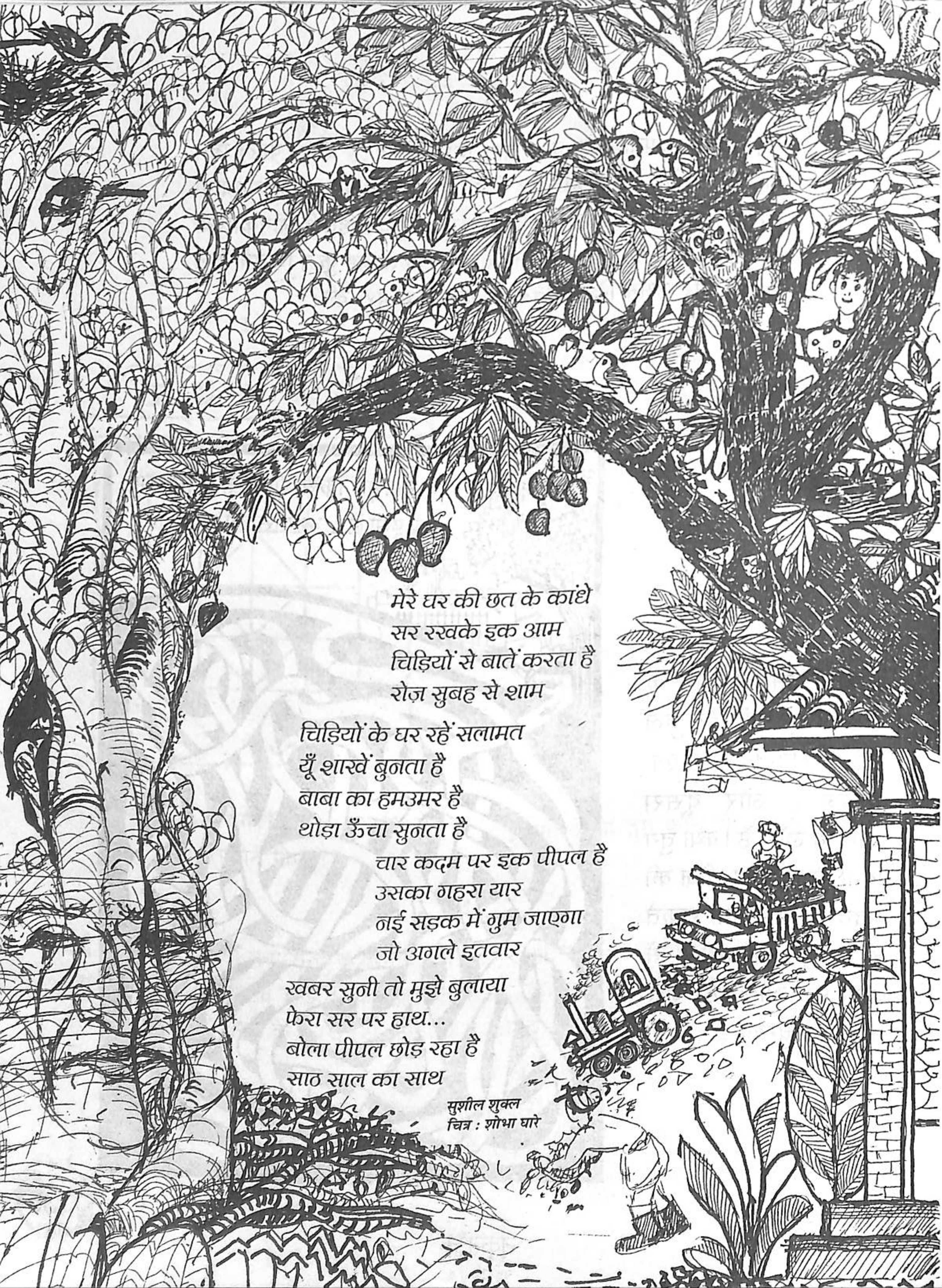

मेरे घर की छत के कांधे
सर रखके इक आम
चिड़ियों से बातें करता है
रोज़ सुबह से शाम

चिड़ियों के घर रहें सलामत
यूँ शाखें बुनता है
बाबा का हमउमर है
थोड़ा ऊँचा सुनता है

चार कदम पर इक पीपल है
उसका गहरा यार
नई सड़क में गुम जाएगा
जो अगले इतवार

खबर सुनी तो मुझे बुलाया
फेरा सर पर हाथ...
बोला पीपल छोड़ रहा है
साठ साल का साथ

सुशील शुक्ल
चित्र : शोभा घारे

खेल समाचार

नाना का निशाना

महाराष्ट्र शूटिंग एसोसिएशन ने हाल ही में राइफल शूटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें फिल्म अभिनेता नाना पाटेकर ने प्री-फायनल के लिए क्वालीफाई किया है। शूटिंग में जिस तरह के एकाग्रता की ज़रूरत होती है वह तो नाना पाटेकर में है ही। खास बात यह है कि शूटिंग जैसे कम लोकप्रिय खेलों को आगे बढ़ाने के लिए नाना धन इकट्ठा करने का काम भी करेंगे।

हॉकी

जापान में गिफू नाम की जगह पर चार देशों का हॉकी टूर्नामेंट चल रहा था। इसके अन्तिम लीग मैच में भारत ने चीन को 4–0 से हराया था। पर फाइनल में दक्षिण कोरिया ने बेहतरीन प्रदर्शन कर भारत को 6–1 से हराकर टूर्नामेंट जीत लिया।

इस साल सितम्बर से एथेन्स में होने वाले ओलम्पिक खेलों के लिए भारतीय हॉकी टीम के 30 सम्भावित खिलाड़ियों के चुनाव का समय पास आता जा रहा है। इस समूह में धनराज पिल्लै को शामिल किए जाने या न किए जाने पर भी घमासान जारी है। धनराज भारतीय टीम के स्टार फॉरवर्ड हैं। उन्हें सम्भावित 30 खिलाड़ियों में शामिल किए जाने का भारतीय हॉकी महासंघ पर दबाव बढ़ता जा रहा है।

बैडमिंटन

बैडमिंटन की खास प्रतियोगिता है थॉमस कप। इस बार इसके फायनल में चीन ने डेनमार्क को हराया। इस तरह चीन ने पाँचवीं बार थॉमस कप जीती।

चीन की महिला टीम ने भी दक्षिण कोरिया को हराकर उबेर कप पर कब्ज़ा कर लिया।

फुटबॉल

सन् 2010 में होने वाले विश्व कप फुटबॉल का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में होगा। मेज़बानी की इस खबर से दक्षिण अफ्रीका में जश्न का माहौल है।

चकमक समाचार

नए चकमक क्लब

देवास ज़िले की खातेगाँव तहसील के पलासी, लकड़ानी और रतनपुर गाँवों में नए चकमक क्लबों का गठन किया गया है। ये गाँव आदिवासी बहुल हैं।

चकमक क्लब की शुरुआत बाल मेले के साथ हुई। चकमक क्लब के बच्चों के लिए अलग पुस्तकालय है जहाँ वे तरह-तरह की किताबें पढ़कर गर्मी की छुट्टियों का आनन्द ले रहे हैं। गाँव के बच्चों ने आपसी सहयोग से राशि जमा की तथा एकलव्य संस्था के सहयोग से चकमक क्लब के लिए सामग्री खरीदी। चकमक क्लबों में बच्चे रोज़ाना रचनात्मक गतिविधियाँ करते हैं। तीन गाँवों के करीब 150 बच्चे इन क्लबों से जुड़े हुए हैं।

नवोदय विद्यालय में बाल मेला

शासकीय नवोदय विद्यालय चन्द्रकेशर बाँध, काँटाफोड़ में 12 और 13 अप्रैल को एक ग्रीष्मकालीन बाल मेला आयोजित किया गया। एकलव्य संस्था की मदद से आयोजित इस बाल मेले में 10 से 15 साल के 220 बच्चों ने भाग लिया। बाल मेले में गतिविधियाँ कराने वाले स्त्रोत व्यक्ति भी आसपास के गाँवों के कुछ बच्चे ही थे।

मेले के प्रारंभ में बच्चों ने गीत गाए। बच्चों ने देर रात तक इस मेले में खेलों का आनंद भी लिया। शेर-बकरी, अंदर-बाहर, बोलो भाई कितने, सिर कमर पैर, नमस्ते-नमस्ते और रस्साकशी जैसे खेल बच्चों ने खूब खेले। ओरेगेमी में कागज़ से कई तरह की चीजें बनाईं। विज्ञान के प्रयोग में वायु दाब, एयर जेक, हेण्डपम्प, गुब्बारा फुलाना, गैस बनाना, टेलीफोन, ध्वनि-स्कोप, इन्द्रधनुष, विद्युत मोटर आदि चीज़ें बनाना बताया गया।

अंधविश्वास उन्मूलन हेतु हाथ की सफाई से जादू के करतब दिखाए गए। इसमें गोली गिलास, गुब्बारे में पिन लगाना, छोटा बड़ा, जादुई बरसात, तीन रस्सी तीन रानी, रस्सी काटना जोड़ना, रुमाल गायब करना जैसे जादू दिखाकर बच्चों ने खूब मज़े किए। अभिव्यक्ति व चित्रकला में चित्र देखकर कहानी लिखना, अधूरी कहानी पूरी करना, अधूरी कविता पूरी करना आदि अभ्यास कराए गए। बच्चों ने शरीर के आंतरिक अंगों के चार्ट में रंग भरे तथा शरीर के अंगों के बारे में चर्चा की। बालिका स्वास्थ्य पर भी बातचीत की। प्रश्नमंच के तहत पहेलियाँ तथा ज्ञानवर्धक रोचक प्रश्न भी बच्चों ने बूझे।

सबके लिए शिक्षा सप्ताह

देवास ज़िले की खातेगाँव तहसील के रतनपुर गाँव की शाला में सबके लिए शिक्षा सप्ताह मनाया गया। यह आयोजन 10 से 15 मार्च तक चला।

पालक शिक्षक संघ के सहयोग से किए गए इस कार्यक्रम में हर दिन बच्चों व पालकों के साथ गतिविधियाँ की गईं। बच्चों ने स्कूल में अच्छी पढ़ाई के लिए सुझाव दिए। बच्चों व पालक शिक्षक संघ के साथ स्कूल में नहीं पढ़ने वाले बच्चों की सूची बनाई। एक दिन पालक शिक्षक संघ, शिक्षकों व बच्चों ने शिक्षा से सम्बंधित नारे व गीत गाते हुए रैली निकाली। दीवार लेखन भी किया।

इस शिक्षा सप्ताह के दौरान चित्रकला तथा खेलकूद का आयोजन भी किया गया। निबंध प्रतियोगिता भी की गई। निबंध का विषय था **मेरा दोस्त या सहेली जो स्कूल नहीं आते**। बच्चों ने

अपने उन साथियों के बारे में लिखा जिन्होंने पढ़ाई छोड़ दी है या जो स्कूल नहीं आते हैं। बच्चों, पालकों व शिक्षकों ने यह भी तय किया कि गर्मी की छुट्टी में वे स्कूल नहीं आने वाले बच्चों से संपर्क करेंगे। और अगले सत्र से उन्हें पढ़ाई के लिए स्कूल लाएँगे।

तीनों रपट : योगेश मालवीय

नए नए पुस्तकालय

4 अप्रैल को माखनलाल चतुर्वेदी के जन्मदिन पर उनके जन्मस्थल बाबई में खासी चहल-पहल थी। वहाँ एक पुस्तकालय जो खुल रहा था – दादा माखनलाल चतुर्वेदी पुस्तकालय। लोग इसके बारे में बहुत उत्साहित थे। कुछ लोगों ने तो इसके लिए अपनी किताबें दान में भी दीं।

गर्मी की छुट्टियों की शुरुआत में ही पुस्तकालय के खुलने से बच्चों के तो मज़े हो गए। इसमें आधी किताबें बच्चों की ही हैं। पुस्तकालय के उद्घाटन के दिन भी बहुत से बच्चों ने कार्यक्रम में शामिल होकर किताबें पढ़ीं, चित्रकारी की।

रपट : प्रमोद मैथिल

भोपाल में भी इन्हीं दिनों कुछ पुस्तकालय खोले गए। एकलव्य के शैक्षिक स्त्रोत केन्द्र के मार्फत शहर की कई बस्तियों में बाल पुस्तकालय चलाए जाते रहे हैं। अब इन्हीं पुस्तकालयों को राजीव गाँधी संस्थापन की मदद से बड़ों व बच्चों के समृद्ध पुस्तकालयों में तब्दील किया जा रहा है।

इनमें से एक गैस पीड़ित बस्ती में चलने वाला स्वाभिमान पुस्तकालय है। एक और पुस्तकालय राहुल नगर में है जिसका उद्घाटन हाल ही में हुआ। यहाँ एक उत्साही युवा समूह इस काम में पूरे जोश से लगा हुआ है। इनका साथ दे रहे हैं ढेर सारे बच्चे और महिलाएँ भी।

रपट : चन्द्रप्रकाश कड़ा

चित्रकला कार्यशाला हुई

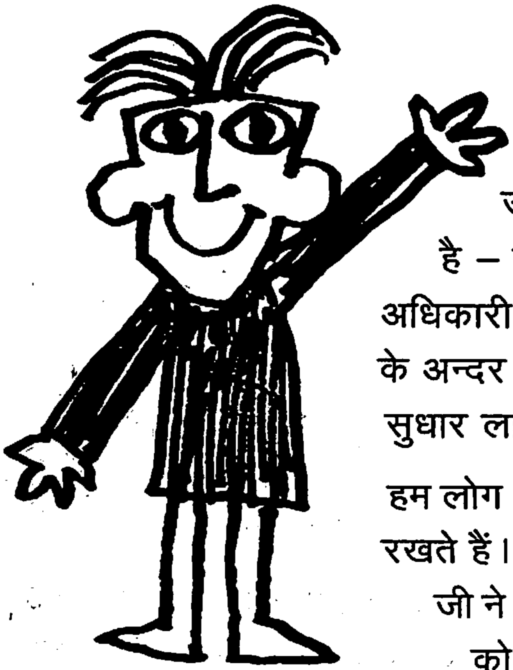

शालिनी राय, आज़मगढ़, उ.प्र.

उत्तरप्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले के जोकहरा गांव में एक पुस्तकालय है – रामानन्द सरस्वति पुस्तकालय। वैसे तो यह गाँव एक बड़े पुलिस अधिकारी के कारण मशहूर है – विभूतिनारायण राय। ये पुलिस व्यवस्था के अन्दर होने वाली गलत बातों को हम सबके सामने लाते रहे हैं और उसमें सुधार लाने की भी कोशिश करते रहे हैं।

हम लोग अक्सर जेल से निकले लोगों के प्रति मन में एक अजीब-सी भावना रखते हैं। हम कोशिश करते हैं कि इनसे दूर ही रहें। पर जानते हो, विभूति जी ने अपने गाँव के इस पुस्तकालय की देखभाल के लिए एक ऐसे व्यक्ति को रखा है जो जेल की सज़ा काट चुके हैं।

क्या तुम उनके इस कदम का महत्व समझ रहे हो? वे हम सब को यह बताना चाहते हैं कि जेल से निकले हुए लोग भी हमारी-तुम्हारी तरह ही काम कर सकते हैं। सामान्य जीवन जी सकते हैं – शर्त सिर्फ यही है कि हम उन्हें ऐसा करने के मौके तो दें। तो इसी खास पुस्तकालय में मार्च के महीने में एक तीन दिनी चित्रकला कार्यशाला का आयोजन हुआ। 15 साल से कम उम्र के बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। मशहूर कार्टूनिस्ट आबिद सुरती ने बच्चों को कार्टून व चित्रकला के बारे में बताया। बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ चित्रकला सीखी। इन बच्चों के कुछ चित्र यहाँ देखो।

रपट : सुधीर शर्मा

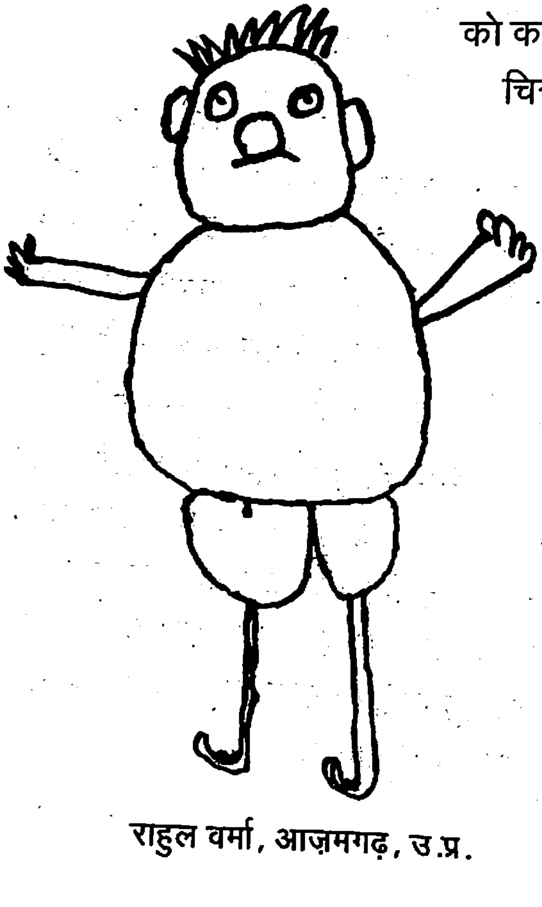

राहुल वर्मा, आज़मगढ़, उ.प्र.

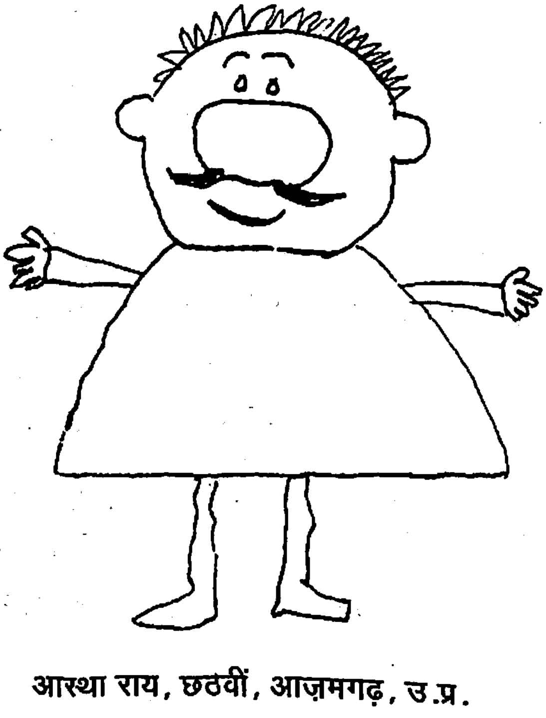

आस्था राय, छठवीं, आज़मगढ़, उ.प्र.

रबरबैंड और फेवीकाल की मदद से यह आकृतियाँ योगेश मालवीय ने बनाई हैं।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

आमना अहमद, 5 वर्ष, फैज़ाबाद, उ.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना